इतिहास दिवाकर

त्रैमासिक अनुसंधान पत्रिका

वर्ष २ अंक १ चैत्र मास कलियुगाब्द ५१११ अप्रैल २००६

मार्गदर्शक :
ठाकुर राम सिंह
डॉ० शिवाजी सिंह
चेतराम
इरविन खन्ना

सम्पादक :
डॉ० विद्या चन्द ठाकुर

सह सम्पादक
चेतराम गर्ग

सम्पादक मण्डल :
डॉ० रमेश शर्मा
डॉ०ओम प्रकाश शर्मा
प्रो० सतीश चन्द्र
सुश्री चारु मित्तल

टंकण एवं सज्जा :
अश्वनी कालिया

सम्पादकीय कार्यालय :
ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान,
नेरी, गांव—नेरी, डाकघर—खगल
जिला—हमीरपुर—१७७००१ (हि०प्र०)
दूरभाष : ०१९७२—२०३०४४

मूल्यः
प्रति अंक —१५.०० रुपये
वार्षिक — ६०.०० रुपये

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय

वर्ष प्रतिपदा

राष्ट्रीय महापर्व : वर्ष प्रतिपदा ठाकुर रामसिंह ५
विक्रमी और शक संवत् राजकुमार पुंज १४
डॉ० हेडगेवार का वर्ष प्रतिपदा को अवतीर्ण बाबा साहेब आपटे १६
New Year Day - Scientific Exploration Shri Chander Pradesh २०

अन्वीक्षण

पृथ्वी राज चौहान के तराईन के द्वितीय युद्ध में हारने का रहस्य सुश्री चारू मित्तल २९

सामयिकी

भारत में प्रचलित जेहादी आतंकवाद का रहस्य डॉ० कुलदीप अग्निहोत्री ३४

नववर्ष अभिनन्दन

सम्पादकीय

नव संवत्सर : कलियुगाब्द 5111

भारतवर्ष *में परम्परा के अनुसार एक वर्ष परिमाप में अनेक संवत् प्रचलित हैं जिनमें विक्रमी और शक संवत् सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। विक्रमी संवत् का उत्तरी और मध्य भारत में प्रतिष्ठित स्थान है तथा पश्चिमी और दक्षिण भारत में शक संवत् का व्यापक प्रचलन है। विक्रमी संवत् के प्रवर्तक उज्जैन के न्यायप्रिय शासक महाराजा विक्रमादित्य माने जाते हैं और शक संवत् की स्थापना प्रतिष्ठानपुर सौराष्ट्र के वीर पराक्रमी राजा शालिवाहन द्वारा की गई है। इन दोनों शासकों की एक बात समान रही है कि पहले महाराजा विक्रमादित्य ने विदेशी आक्रमणकारी शकों को हरा कर भारतवर्ष से बाहर किया और बाद में जब किसी तरह इनकी गतिविधियां फिर बढ़ी तो विक्रमी संवत् के 135 वर्ष पश्चात् राजा शालिवाहन ने शकों को पूरी तरह से पराजित करके देश को स्वतंत्र करवाया। विदेशी शत्रुओं से मुक्त देश को शक्ति और समृद्धि के शिखर पर पहुंचा कर कलियुगाब्द के 3044 वर्ष पश्चात् विक्रमी संवत् और 3179 वर्ष बाद शलिवाहन शक संवत् का प्रवर्तन हुआ। आज शासकीय मान्यता के कारण सामान्य कामकाज में प्रायः ईस्वी सन् का प्रयोग होता है लेकिन भारत की सनातन परम्परा से जुड़े समाज के प्रत्येक धार्मिक कृत्य व्रत, त्यौहार, जन्म से मृत्यु तक के सभी संस्कार आदि विक्रमी और शक संवत् की चान्द्रमास आधारित तिथियों अथवा सौरमास के प्रविष्टों के आधार पर ही सुनिश्चित होते हैं। इन दोनों तथा देश में प्रचलित अन्य संवतों के अतिरिक्त विगत वर्षों से राष्ट्रीय भावना के उत्थान के साथ भारतीय समाज पुनः अपने प्राचीन वैज्ञानिक संवत् कलियुगाब्द से अवगत हुआ है। इसे कलि संवत् या युगाब्द के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि यह संवत् कलियुग की कालावधि को अभिव्यक्त करता है, अतः स्पष्टता की दृष्टि से इसे कलियुगाब्द कहा जाना ही उपयुक्त है।*

विक्रमी, शक आदि संवत् जो भारत भूमि के इतिहास और संस्कृति के समृद्ध धरातल पर विकसित हुए, उनका प्रयोग हमारे राष्ट्रीय स्वाभिमान को अवश्य प्रतिबिम्बित करता है लेकिन हमें इस बात की जानकारी भी अवश्य रहनी चाहिये कि ये सब संवत् किसी व्यक्ति या कालक्रम में किसी घटना विशेष से सम्बंधित होने के कारण कालगणना के मौलिक वैज्ञानिक आधार नहीं हो सकते। वास्तव में कालगणना का सीधा सम्बंध काल से है और इसीलिये काल से जुड़ी गणना ही वैज्ञानिक कालगणना मानी जा सकती है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कलियुगाब्द का विशेष महत्त्व है। कलियुगाब्द का सम्बंध भारत की ऋषि प्रज्ञा की अपनी त्रिकालदर्शी योग साधना द्वारा प्रतिपादित कालगणना पर आधारित है जिसकी सूक्ष्म से सूक्ष्म तथा बड़ी से बड़ी इकाई की विवेचना भारतीय खगोल एवं ज्योतिष शास्त्रीय ग्रन्थों में उपलब्ध है। काल से प्रादुर्भूत कालक्रम को इसमें कल्प, मन्वन्तर, युग एवं संवत् में विभाजित किया गया है। हिन्दू समाज में किसी भी धार्मिक अनुष्ठान को प्रारम्भ करते हुए पढ़े जाने वाले संकल्प मंत्र के माध्यम से भारतीय कालगणना पूर्णतया संरक्षित रही है जिसके अनुसार इस समय भगवान् ब्रह्मा की आयु के दूसरे परार्द्ध में श्वेतवाराह नामक कल्प के अन्तर्गत वैवस्वत मन्वन्तर के 28 वें कलियुग का प्रथम चरण चल रहा है। संकल्प मंत्र के आरम्भ में ही उक्त कालगणना का संदर्भ पढ़ा जाता है जिसका उल्लेख इस प्रकार से है–

ॐ अद्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे आदि प्रथम चरणे..........................

कल्प, मन्वन्तर, चतुर्युग आदि का उल्लेख सभी हिन्दू पंचागों में किया होता है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन पुरोहितों द्वारा जो वर्षफल पत्रक पढ़ा जाता है, उसमें भी कल्पादि भारतीय कालगणना का उल्लेख होता है। जैसे कि इस वर्ष विक्रमी संवत् सौर मास के चैत्र प्रविष्टे 14 तदनुसार 27 मार्च, 2009 को चैत्र शुक्ल प्रतिपदा है, अतः इसी दिन से नव संवत्सर का शुभारम्भ है। इस दिन पढ़े और सुने जाने वाले वर्षफल पत्रक में इस प्रकार लिखा है–

अथ श्रीमन्नृपति वीरविक्रमादित्यराज्यात् संवत् 2066 शलिवाहनशके 1931 साम्प्रतं कल्पादिगतवर्षाणि 1,97,29,49,110 कलिगतवर्षाणि 5110 भोग्यकलिवर्षाणि 426890 अथास्मिन् वर्षे बार्हस्पत्यमानेन शुभकृत् नामक संवत्सरोऽस्ति......... ।

इस काल विवरण के अनुसार शुभकृत् नामक विक्रमी संवत् 2066 तक कलियुग के 5110 वर्ष बीत चुके हैं और इस वर्ष प्रतिपदा को नव संवत्सर कलियुगाब्द 5111 आरम्भ हुआ है।

कलियुगाब्द अथवा कलि संवत् का प्रयोग अनेक ग्रन्थों तथा शिलालेखों में मिलता है जिससे यह प्रमाणित होता है कि यह संवत् व्यवहार में भी लोक प्रिय रहा है। कलियुगाब्द की भांति विक्रमी, शक आदि भारत में प्रचलित अन्य अनेक संवतों का शुभारम्भ भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन ही होता है। जो इस बात का प्रमाण है कि बाद के संवत् प्रवर्तकों ने कल्पादि के कालक्रम का पूरी आस्था और विवेक से अनुसरण किया है। इसीलिए चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नया सम्वत् के त्यौहार के रूप में आंचलिक प्रथाओं के साथ पूरे भारतवर्ष में मनाया जाता है।

राष्ट्र की गौरवशाली परम्परा की पहचान नव संवत्सर का प्रत्येक राष्ट्रवासी हृदय से अभिनन्दन करें तथा इस पावन अवसर पर सम्पूर्ण सृष्टि की मंगल कामना करें। ईश्वर चरणों में हमारी प्रार्थना है कि–

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।

अर्थात् समस्त प्राणी सुख शांति से पूर्ण हों, सभी रोग व्याधि से मुक्त रहें, किसी के भी भाग में कोई दुःख न आवे और सभी कल्याण मार्ग का दर्शन एवं अनुसरण करें।

इति शुभम्।

विनीत,

डॉ0 विद्या चन्द ठाकुर

राष्ट्रीय महापर्व : वर्ष प्रतिपदा

● ठा० राम सिंह

वर्ष प्रतिपदा चैत्र मास के शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन प्रतिवर्ष आती है। अपने देश के घर–घर में वर्ष प्रतिपदा का पर्व बड़े उल्लास और श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। इसीलिये इस पावन दिवस को राष्ट्रीय महापर्व का महत्त्व प्राप्त है। ज्योतिष विद्या के प्रसिद्ध ग्रन्थ हेमाद्रि में उल्लिखित है कि सृष्टिकर्ता ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को आरम्भ की थी। ब्रह्म पुराण में भी इसी प्रकार का उल्लेख है–

चैत्र मासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहिन।
शुक्लपक्षे समग्रं तु तदा सूर्योदये सति।।

अर्थात् ब्रह्मा जी ने चैत्र मास में शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन सूर्योदय काल में सृष्टि की रचना की है। विश्वविख्यात वैज्ञानिक भास्काराचार्य अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ सिद्धांत शिरोमणि में लिखते हैं कि चैत्र मास के शुक्ल पक्ष के प्रारम्भ में रविवार के दिन से मास, वर्ष एवं दिन एक साथ आरम्भ हुए हैं। यही कारण है कि भारतवर्ष में प्रचलित अनेक सम्वत् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही शुरू होते हैं। सृष्टि रचना के क्रमिक विकास में १ अरब, ९७ करोड़, २९ लाख, ४९ हजार, ११० वर्ष पूर्व भारत भूमि पर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही पहले मानव का आविर्भाव हुआ है। इस दृष्टि से यह दिन केवल हिन्दुओं के लिए ही नहीं अपितु सारे मानवकुल के लिए माननीय है।

कालान्तर में इस दिन के साथ राष्ट्रीय महत्त्व की कुछ ऐसी घटनाएं जुड़ गई जिससे इस पर्व को समाज में अत्यधिक आस्था और मान्यता प्राप्त हुई। जैसे सतयुग में जगत के त्राण के लिए भगवान् विष्णु ने इसी दिन मत्स्य रूप में पहला अवतार ग्रहण किया। स्मृतिकौस्तुभ ग्रन्थ में लिखा है–

कृते व प्रभवे चैत्रे प्रतिपच्छुक्लपक्षगा।
मत्स्यरूपकुमार्यां व अवतीर्णो हरि स्वयम्।

वर्ष के प्रथम नवरात्रों का आरम्भ भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ही होता है। इन्हें वासन्तिक नवरात्रे कहते हैं। इसके अतिक्ति यह नवरात्रे राम नवरात्रे भी कहलाते हैं क्योंकि इन नवरात्रों में चक्रवर्ती सम्राट मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान रामचन्द्र का जन्म दिन 'राम नवमी' का पर्व आता है तथा भारतीय इतिहास परम्परा के अनुसार आज से १ करोड़ ८५ लाख वर्ष पूर्व रामचन्द्र जी का राज्याभिषेक भी इसी नवरात्र के पहले दिन वर्ष प्रतिपदा को हुआ था।

एक अन्य घटना चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य से सम्बधित है। उन्होंने विदेशी

आक्रामक शकों को पराजित कर देश को चारों ओर से सुरक्षित कर के परम वैभव तक पहुंचाया। बाद में देश को ऋणमुक्त कर अपने नवरत्न और ज्योतिषों से परामर्श करके उन्होंने प्रयागराज में वात्स्यायन भारद्वाज की अध्यक्षता में आयोजित धर्मसभा में आज से २०६५वर्ष पूर्व इसी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से अपने नाम पर विक्रम सम्वत् शुरू किया था। इसी प्रकार महाराष्ट्र प्रतिष्ठानपुर के शासक शालिवाहन ने शकों को पूरी तरह नष्ट करके आज से १९३० वर्ष पहले शक सम्वत् शुरू करने का अधिकार प्राप्त किया था। महाराष्ट्र आदि प्रान्तो में शक सम्वत् का बहुत प्रचलन है। इस सम्वत् का शुभारम्भ भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को होता है। महाराष्ट्र, गोवा आदि प्रान्तों में इस दिन को गुडी पड़वा पर्व के रूप में मनाया जाता है।

सिन्ध के हिन्दू धर्म रक्षक सन्त सिपाही झूले लाल का जन्म सिन्ध के नसरपुर नगर में चैत्र शुक्ल द्वितीया, सम्वत् १००७ को शुक्रवार के दिन हुआ था। प्रतिवर्ष इनका जन्मोत्सव वर्ष प्रतिपदा से ही मनाया जाता है। सन्त सिपाही झूलेलाल का वास्तविक नाम उदयचन्द्र था परन्तु जब वे घोड़े पर चढ़कर भगवा ध्वज हाथ में लेकर युद्ध क्षेत्र में कूच करते थे तो मस्ती में झूलते थे। इसी कारण इनका नाम झूलेलाल पड़ा। इतना ही नहीं 'आया लाल झूले लाल' यह उस समय का जंगी नारा बन गया था। जब कभी युद्ध में यह नारा गूंजता था तो अत्याचारी मुस्लिम सेना भयभीत होकर भाग जाती थी।

आर्य संस्कृति के पुनरुत्थान के लिए स्वामी दयानन्द ने मुम्बई में ईस्वी सन् १८७५ अर्थात् कलियुगाब्द ४९७७ के वर्ष प्रतिपदा के दिन ही आर्य समाज की स्थापना की। भारत राष्ट्र की सनातन हिन्दू संस्कृति के पुनर्जागरण के पुरोधा एवं विश्व की सबसे बड़ी स्वयंसेवी संस्था राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के निर्माता परम पूजनीय डाक्टर केशवराव बलिराम हेडगेवार का जन्म भी कलियुगाब्द ४९९१ तदनुसार ईस्वी सन् १८८९ को चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन ही हुआ था।

उपरोक्त उल्लेखित प्रसंगों और घटनाओं से यह स्पष्ट हो जाता है कि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का दिन हमारी धार्मिक और ऐतिहासिक परम्पराओं से जुड़ा हुआ है। यह हमारी अस्मिता की पहचान और आत्म—गौरव का दिन है परन्तु भारत वर्ष को जो दासता की लम्बी अवधि झेलनी पड़ी, उससे समाज में मानसिक दासता भी पैदा हुई। इसी दासता भाव का परिणाम है कि हमारे देश में बहुत अधिक लोग चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के स्थान पर पहली जनवरी को ही नववर्ष दिवस मनाते है। वे भूल जाते हैं कि यह दिन हमारे लिए किसी भी प्रकार से राष्ट्रीय गौरव का दिन नहीं है।

ईरान का उदाहरण

ईस्वी सन् २००१ के प्रथम दिन पहली जनवरी को ईरान के कुछ मुसलमानों ने नव वर्ष दिवस समारोह आयोजित किया। उनके इस अपराध के लिये वहां की सरकार ने उन्हें पचास—पचास कोड़े मारने का दंड दिया था। समारोह में सम्मिलित सभी पुरुषों और

महिलाओं को यह सजा भुगतनी पड़ी। सरकार का कहना था कि पहली जनवरी ईसाइयों के नववर्ष का दिन है— मुसलमानों का नहीं। समाचार पत्रों में प्रकाशित यह घटना क्या हमारे लिये पाठ नहीं है? अत: हम भारत के नागरिक पहली जनवरी के स्थान पर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को अपना भारतीय नया वर्षारम्भ मनाकर आत्मगौरव का अनुभव कर सकते हैं। हमें ईरान की भांति अपने संवत्सर का महत्त्व समझना चाहिए।

राष्ट्रीय महापर्व

घर—घर में मनाया जाने और पूर्व उल्लिखित जो महत्त्वपूर्ण घटनाएं इसके साथ जुड़ी हुई हैं, उनके कारण जैसा कि प्रारम्भ में कहा गया है, वर्ष प्रतिपदा को समाज में राष्ट्रीय महापर्व का स्थान प्राप्त हो गया है। अतिपवित्र और वैज्ञानिक होने से इस दिवस के उपलक्ष्य में अनेक धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक अनुष्ठानों का आयोजन होता है — यथा सत्यनारायण कथा, भागवत पाठ, रामायण पाठ, शिलान्यास, नवीन संस्थारम्भ इत्यादि।

मुख्य कार्यक्रम—वर्ष फल पाठ

नए वर्ष के इस नए दिन हर हिन्दू घर में नव वर्ष के फल के पाठ का आयोजन होता है। परिवार के सभी सदस्य स्नान कर नए वस्त्र धारण कर के घर में एक स्थान पर एकत्रित होते हैं। कुल पुरोहित आता है, वह नए वर्ष का पंचांग खोल कर वर्ष के फल का पाठ करता है। नव वर्ष का राजा कौन है, मंत्री कौन है, इस वर्ष उद्योग—धन्धे, कृषि वर्षा के क्या योग है; देश की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनैतिक अवस्था कैसी रहेगी आदि सब बातों का समावेश खगोलशास्त्र के आधार पर बने वर्षफल में होता है। इसके अतिरिक्त नव वर्ष में घटित होने वाली सम्भाव्य अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं का भी उल्लेख इस वर्षफल में होता है।

इस शुभ दिन के उपलक्ष्य में घरों की सफाई कर उनको सजाया जाता है। पताकाएं—विशेषत: भारतीय संस्कृति के प्रतीक भगवा ध्वज को घर पर लहराया जाता है। चाय—पान और भोजों के कार्यक्रमों पर अपने सम्बंधियों और मित्रों को निमंत्रित किया जाता है।

आमोद—प्रमोद, हर्षोल्लास के अनेक कार्यक्रमों और उनकी रचना की विधि में विविधता रहती है; किन्तु योजना करते समय वर्ष प्रतिपदा के उत्सव के मूल तत्त्व का ध्यान अवश्य रखा जाता है।

वैज्ञानिक भारतीय कालगणना

वर्ष प्रतिपदा कालतत्त्व के साथ संम्बंधित होने के कारण हमें कालगणना का भी विचार करना होगा। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से शुरू होने वाला भारतीय वर्ष संवत्सर और उसकी कालगणना अतिवैज्ञानिक है। हमारे खगोल वैज्ञानिकों ने काल की सूक्ष्म से सूक्ष्म और बड़ी से बड़ी दीर्घ इकाइयों का निर्माण वैज्ञानिक चिन्तन के आधार पर किया है। यह

गणना वेदों—ऋग्वेद, यजुर्वेद, मनुस्मृति और पुराणों में एक जैसी है। बाद में विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक आर्यभट्ट, भास्कराचार्य, वराहमिहिर और बह्मगुप्त ने भी इनका प्रतिपादन अपने ग्रन्थों में इसी आधार पर किया है।

काल की छोटी इकाइयां

हमारे मनीषियों ने काल का गहन विचार कर उसकी जो छोटी इकाइयों का निर्माण किया है, वह इस प्रकार है—

काल की छोटी प्रथम इकाई परमाणु है। यहां से शुरू कर दिनमान के पूर्व १२ इकाइयां हैं—

२ परमाणु = १ अणु

३ अणु = १ त्रस्रेणु

३ त्रस्रेणु = १ त्रुटि : त्रुटि १ सैकेण्ड का ३३७५० वां भाग है। कमल के पत्ते को सूई से छेद करने में जितना समय लगता है उसे त्रुटि कहते हैं।

१०० त्रुटि = १ वेध

३ वेध = १ लव

३ लव = १निमेष

३ निमेष = १ क्षण

५ क्षण = १ काष्ठा

१५काष्ठा = १ लघु

१५लघु = १ नाडिका

६ नाडिका = १ प्रहर

८ प्रहर = १ दिन रात (अहोरात्र)

कालगणना की दीर्घतम इकाई महाकल्प का आरम्भ दिनमान से होता है।

दिनमान

दिन चार प्रकार के हैं — १. सावन दिन २. सौर दिन ३. चान्द्र दिन ४. नाक्षत्र दिन।

सावन दिन

पृथ्वी की सूर्य में दो गतियां है। पहली गति में यह अपनी कक्षा की धुरी पर १६०० किलोमीटर प्रति घंटा के हिसाब से घुमती है। ऐसा करने में उसे एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक २४ घंटे लगते हैं। १२ घंटे पृथ्वी का पूर्वार्द्ध सूर्य के सामने तथा १२ घंटे तक उत्तरार्द्ध सूर्य के सामने रहता है। जो भाग सूर्य के सामने होता है उसे दिन और जो पीछे होता है उसे रात्रि कहते हैं। इस गति के कारण अहोरात्र बनते हैं। अहोरात्र को सावन दिन या भू दिन कहा जाता है।

सौर दिन

पृथ्वी अपनी दूसरी गति में सूर्य की परिक्रमा १ लाख किलोमीटर प्रति घंटा के हिसाब से ३६५.२५ दिनों में पूरी करती है। यदि पृथ्वी की कक्षा को ३६० डिग्री में विभक्त किया जाए तो पृथ्वी का अपनी कक्षा पर १ डिग्री चलन १ सौर दिन कहलाता है। सौर दिन सावन दिन से २१ मिनट बड़ा होता है।

चान्द्र दिन

चान्द्र दिन को तिथि कहते हैं। पृथ्वी का भ्रमण करते हुए चन्द्रमा का १२ अंश तक चलन एक तिथि अथवा चान्द्र दिन होता है। अमावस्या के दिन चन्द्रमा पृथ्वी और सूर्य के मध्य सूर्य से ठीक नीचे होता है। यह स्थिति ० अंश कहलाती है। उस समय चन्द्रमा सूर्य के निकट होता है और बाद में सूर्य से १२ अंश के हिसाब से दूर होता जाता है। १२ अंश तक का समय एक तिथि या दिन कहलाता है। जब चन्द्रमा सूर्य से १८० अंश दूर होता है तो पूर्णिमा होती है। पूर्णिमा के बाद चन्द्रमा १२ अंश के हिसाब से सूर्य के निकट आना शुरू होता है। इसे कृष्ण पक्ष की तिथियां कहते हैं। इस प्रकार शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष का निर्माण होता है। इन दो पक्षों के दिनों को जोड़कर चान्द्रमास बनता है।

नाक्षत्र दिन

पृथ्वी अपनी धुरी पर पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती है। पृथ्वी का कोई निश्चित स्थान किसी निश्चित नक्षत्र के सामने घूमता हुआ अगले दिन जब उसी नक्षत्र के सामने आ जाता है तो नक्षत्रों का एक चक्र पूरा हो जाने से एक नाक्षत्र दिन कहलाता है।

दिन अथवा वार का प्रारम्भ

सूर्य सिद्धान्त के अनुसार सृष्टि का आरम्भ आधी रात्रि से हुआ है। विश्व के अधिकतम देशों मे अर्धरात्रि में ही दिन का आरम्भ माना जाता है। परन्तु दूसरी ओर विष्णु धर्मोत्तर पुराण, आर्यभट्ट प्रथम और भास्काराचार्य सृष्टि का आरम्भ सूर्योदय से मानते हैं। उनके मत से सूर्योदय से दिन का प्रारम्भ होता है। यह दोनों ही मान्यताएं आजकल प्रचलित हैं।

सप्ताहमान

सात सावन दिनों का सप्ताह होता है। सप्ताह के दिनों के नाम उन आकाशीय ग्रहों के नाम पर रखे गए हैं। जो हमारी पृथ्वी को प्रभावित करते हैं।

पक्षमान

पक्षों के दो प्रकार हैं — १. शुक्ल पक्ष और २. कृष्ण पक्ष। एक पक्ष प्राय: १५ दिन का होता है।

मासमान

दो पक्षों का एक मास होता है। मुख्य रूप से मास दो प्रकार के होते हैं—१. चान्द्र मास २. सौर मास।

अयनमान

अयन दो हैं — १. उत्तरायण, २. दक्षिणायन। एक अयन ६ मास का होता है।

वर्षमान

पृथ्वी सूर्य के चारों ओर जिस कालावधि में अपनी परिक्रमा पूरी करती है उस कालावधि को एक वर्ष कहा गया है। १९७ करोड़ वर्ष पहले पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमने में ३६० दिन लगाती थी। यही कारण है कि उस समय वैदिक ऋषियों ने एक वृत्त को ३६० डिग्री में विभाजित किया और एक वर्ष में ३६० दिन अथवा ७२० दिन—रात का वर्णन किया है। वर्तमान में वर्ष ३६५.२५ दिन का होता है। इसका कारण पृथ्वी परिक्रमण में वृद्धि है।

युगमान

५ वर्षीय युग, १२ वर्षीय युग, ६० वर्षीय युग, चतुर्युगमान या महायुग।

(क) ***५ वर्षीय युग***

वर्ष से बड़ी कालगणना हेतु सूर्य और चन्द्रमा के एक ही नक्षत्र में योग को आधार बनाया गया। सूर्य ओर चन्द्रमा की पांच वर्ष बाद उसी तिथि नक्षत्र में युति होती है। अत: इस अवधि को ५ वर्ष के युग के रूप में माना गया। इसलिये ५ वर्षीय युग युगमान की प्रारम्भिक इकाई है।

(ख) ***१२ वर्षीय युग***

बृहस्पति एक राशि को पर करने में १ वर्ष का समय लगाता है और एक भगण चक्र १२ वर्ष में पूर्ण करता है। अत: सूर्य और चन्द्रमा के बाद हिन्दू ऋषियों ने कालगणना के लिये बृहस्पति का चयन किया और बृहस्पति के भगण चक्र के काल के आधार पर युग की सीमा १२ वर्ष बड़ी कर दी गई।

(ग) ***६० वर्षीय युग***

युग की सीमा को और बड़ा करने के लिये ५ वर्षीय युग का परिगणन बृहस्पति के संदर्भ में किया गया। बृहस्पति का एक भगण चक्र १२ वर्षों में पूरा होता था और ५ भगण चक्रों का युग माना जाता था। ५ भगण चक्रों का काल १५ को ५ से गुणा करने पर ६० होता है। इस प्रकार युग के मान का विकास तीन चरणों में पूरा हुआ। पहले चरण में युग ५ वर्ष का था, दूसरे में १२ वर्ष का और तीसरे में ६० वर्ष का युग विकसित हुआ। अश्विनी नक्षत्र से आरम्भ होने वाले ६० वर्षीय युग के आरम्भ का काल कल्पादि से है, परन्तु धनिष्ठा नक्षत्र में प्रारम्भ होने वाले ६० वर्षीय युग का प्रारम्भ ८६ करोड़, ५० लाख वर्ष बाद हुआ। उस समय धनिष्ठा नक्षत्र में सूर्य, चन्द्र और बृहस्पति की युति हुई थी। ऐसी घटना प्रति ८६ करोड़ ५० लाख वर्ष बाद होती है।

(घ) ***चतुर्युग मान या महायुग***

पूर्व वर्णित तीन युगों से और अधिक लम्बी अवधि वाले युगों का भी निर्माण किया गया। भारतीय मनीषा के अनुसार कल्प के आरम्भ में सातों ग्रह अपने भोग और शर के साथ इकट्ठे थे। वे घूमते हुए ४,३२,००० वर्ष के बाद पुन: उसी स्थान पर आते हैं। इनकी एक युति के काल को कलियुग कहा गया है। दो युति के काल को द्वापर (अर्थात् कलियुग से दुगुना), तीन युति के काल को त्रेता तथा चार युति के काल को सतयुग कहते हैं। इन चारों युगों को मिलाकर महायुग बना। एक महायुग की आयु ४३,२०,००० वर्ष होती है।

मन्वन्तर मान

चतुर्युग 'महायुग' के अतिरिक्त हिन्दू मनीषियों ने और भी लम्बी अवधि वाले मन्वन्तर का निर्माण किया। इसका आधार जगतक्रम के परिवर्तन और पृथ्वी की ध्रुवता के परिवर्तन में लगने वाले काल को बनाया। सृष्टि का बदलाव ३०, ८४, ४८, ००० वर्षों में होता है। इस कालखण्ड को मनु या मन्वन्तर कहा गया है।

हमारे वैदिक ऋषियों ने वर्तमान सृष्टि को पांच मंडल क्रम वाली खोजा। ये मण्डल इस प्रकार हैं—चन्द्र मण्डल, पृथ्वी मण्डल, परमेष्ठी मण्डल और स्वाम्भुव मण्डल। उक्त मण्डल क्रमश: उत्तरोत्तर मण्डल के चारों ओर घूमते हैं। यह परिभ्रमण मण्डलाकार होता है। उदाहरण के लिये चन्द्र मण्डल पृथ्वी मण्डल के गिर्द, पृथ्वी मण्डल सूर्य मण्डल के, सूर्य मण्डल परमेष्ठी मण्डल और परमेष्ठि मण्डल स्वायम्भुव मण्डल का परिभ्रमण कर रहे हैं। यह परिभ्रमण क्रम ही कालखण्डों का निर्माता है। वास्तव में सूर्य द्वारा परमेष्ठि मण्डल का परिभ्रमण ही पृथ्वी की ध्रुवता और दिशा क्रम के परिवर्तन का कारण है।

सूर्य मण्डल, परमेष्ठि मण्डल का परिभ्रमण ३०,६७,२०,००० वर्ष में पूरा करता है। गणना की दृष्टि से इसमें १ संधिकाल जोड़ना पड़ता है और फिर वह जोड़ एक मन्वन्तर काल बन जाता है। एक संधि का काल सतयुग के १७,२८,००० वर्ष का होता है। एक अन्य हिसाब के अनुसार ७१ महायुगों का मन्वन्तर होता है अर्थात् ४३,२०,०००× ७१ = ३०,६७,२०,००० वर्ष। इसमें एक सन्धिकाल जोड़ने पर ३०,६७,२०,०००+१७,२८,०००= ३०,८४,४८,००० वर्ष।

कल्पमान

१४ मन्वन्तरों का एक कल्प होता है। अत: ३०, ८४, ४८, ०००× १४ + १७, २८, ००० = ४, ३२, ००, ००, ००० वर्ष। १४ मन्वन्तरों की १५संधियां बनती है। १४ संधियां पहले जोड़े में आ गई हैं और १५ वीं अभी के हिसाब से जोड़ी गई है। एक अन्य हिसाब के अनुसार १००० महायुगों के चक्र का कल्प होता है। अर्थात ४३, २०,००० × १००० = ४, ३२, ००, ००, ००० वर्ष।

ब्रह्ममान

ब्रह्मा का एक दिन – एक कल्प की आयु ब्रह्मा का एक दिन होता है। इनती ही ब्रह्मा की रात्रि होती है। अतः ब्रह्मा का एक दिन–रात (अहोरात्र) ८, ६४, ००, ००, ००० वर्ष होता है।

ब्रह्मा का एक वर्ष

८,६४,००, ००,००० × ३६० = ३१, १०,४०, ००, ००, ००० वर्ष। (३१ खरब, १० अरब, ४० करोड़ वर्ष)।

ब्रह्मा की कुल आयु १०० वर्ष ३१,१०, ४०, ००, ००, ०००+ १००= ३१, १०,४०, ००, ००, ००, ००० वर्ष। (३१ नील, १० खरब, ४० अरब वर्ष)।

महाकल्पमान

दिनमान से शुरू होकर दीर्घतम इकाई महाकल्पमान तक काल की कुल १२ इकाइयां है। महाकल्प अर्थात् ब्रह्म की १०० वर्ष की आयु ३१, १०,४०, ००, ००, ००, ००० (३१ नील, १० खरब, ४० अरब)वर्ष। इस समय तक ब्रह्मा की आयु के ५० वर्ष पूर्ण होकर वर्तमान श्वेत वाराह कल्प से ब्रह्मा ने अपने ५१ वें वर्ष में प्रवेश किया है।

जलप्लावन

वर्तमान श्वेत वाराह कल्प की आयु ४, ३२, ००,००, ००० वर्ष है। यह सारी आयु १४ मन्वन्तरों में विभक्त है। इस समय तक ६ मन्वन्तर बीत चुके हैं और सातवें वैवस्वत मन्वन्तर की २८ चतुर्युगी का कलियुग चल रहा है।

प्रत्येक मन्वन्तर की समाप्ति पर १७,२८, ००० वर्ष का जलप्लावन आता है और उसके बाद नया मनु सृष्टि की रचना करता है। इस समय तक ६ जलप्लावन आ चुके हैं।

प्रलय

प्रत्येक कल्प की समाप्ति पर प्रलय आता है। वर्तमान श्वेत वाराह कल्प की अभी आधी आयु भी बीती नहीं है। पूरी आयु ४ अरब, ३२ करोड़ वर्ष बीतने पर इस पृथ्वी की धारण शक्ति समाप्त हो जाएगी। सूर्य के ताप से सब कुछ जल जाएगा और यह पृथ्वी चांद, बुद्ध और शुक्र की भान्ति बंजर हो जाएगी। पुरानी सृष्टि समाप्त हो जाएगी। विष्णु पुराण में लिखा है कि ऐसा होने पर नयी मानव सृष्टि बृहस्पति पर होगी।

महाप्रलय

ब्रह्मा की आयु के १०० वर्ष पूर्ण होने पर महाप्रलय होगा। सारा ब्रह्माण्ड उस में लीन हो जाएगा। ब्रह्मा जी भी शान्त हो जाएंगे। प्राकृतिक नियम अर्थात् ईश्वरीय शक्ति से ब्रह्मा जी पुनः जाग्रत होंगे। पुनः ब्रह्माण्ड की रचना होगी और फिर मानव सृष्टि होगी। यह सर्ग प्रति सर्ग का चक्र अनादि काल से चला है और आगे भी चलता रहेगा।

कालतत्त्व की इस रहस्यमयी लीला का ज्ञान जिस माध्यम से प्राप्त होता है, वह विश्व में एकमेव अद्वितीय भारतीय कालगणाना ही है। राष्ट्रीय महापर्व वर्ष प्रतिपदा इसी कालगणना का उत्सव है। कालतत्त्व पर आधारित भारतीय नववर्ष के प्रतीक वर्ष प्रतिपदा के धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक महत्त्व, इससे सम्बन्धित मानव सृष्टि जगत के कल्याणार्थ प्रथम मत्स्य विष्णु अवतार का आविर्भाव तथा अन्य घटनाओं के कारण इस दिन की श्रेष्ठता में निरन्तर विस्तार हुआ है। भारतवासियों के लिए तो यह दिन अत्यन्त आत्मगौरव का दिन है ही, इसके सभी पक्षों पर विचार करें तो इस दिवस का वैश्विक महत्त्व सिद्ध होता है।

समाचार पत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से सम्बंधित विवरण

फार्म –४ (नियम ८ देखिए)

१. प्रकाशन स्थल	:	ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान हमीरपुर नेरी
२. प्रकाशन तिथि	:	अप्रैल, जुलाई, अक्तूबर, जनवरी माह का प्रथम सप्ताह
३. मुद्रक का नाम	:	चेतराम
क्या भारतीय नागरिक है?	:	हां
पता	:	ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान हमीरपुर नेरी गांव नेरी, डाकघर खगल, जिला हमीरपुर–१७७००१ हिमाचल प्रदेश।
४. प्रकाशक का नाम	:	चेतराम
क्या भारतीय नागरिक है?	:	हां
पता	:	ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान हमीरपुर नेरी गांव नेरी, डाकघर खगल, जिला हमीरपुर–१७७००१ हिमाचल प्रदेश।
५. सम्पादक का नाम	:	डॉ० विद्या चन्द ठाकुर
क्या भारतीय नागरिक है?	:	हां
पता	:	ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान हमीरपुर नेरी गांव नेरी, डाकघर खगल, जिला हमीरपुर–१७७००१ हिमाचल प्रदेश।
६. उन व्यक्तियों के नाम व पत्ते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के साझेदार या हिस्सेदार हों।	:	ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान हमीरपुर नेरी गांव नेरी, डाकघर खगल, जिला हमीरपुर–१७७००१ हिमाचल प्रदेश।

मैं चेतराम प्रकाशक एवं मुद्रक इतिहास दिवाकर एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकृत जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गए विवरण सत्य है।

हस्ता/–
चेतराम
प्रकाशक
दिनांक १ अप्रैल, २००९

विक्रमी सम्वत् और शक सम्वत्

● राजकुमार पुंज

भारतीय कालगणना में काल की अवधि कल्प, मन्वन्तर, युग, संवत्सर आदि में विभाजित है। हिन्दू समाज का कोई भी व्यक्ति चाहे वह गांव में रहता है या शहर में, पढ़ा लिखा है या अनपढ़, भले ही काल की कल्प आदि लम्बी अवधियों के बारे में अधिक न जनता हो लेकिन वह चार युगों की जानकारी अवश्य रखता है। वह यह भी जानता है कि इस समय चार युगों में से कलियुग का समय चला हुआ है। काल पर आधारित कालगणना के अन्तर्गत लोक में कलियुग तथा चार युगों का बोध होना, हमारी कालगणना की समृद्ध परम्परा और वैज्ञानिकता का प्रतीक है। शास्त्रीय परम्परा हमें बताती है कि ईस्वी सन् २००९, २७ मार्च को चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन जब भारतीय कालगणना पर आधारित नया सम्वत् का आरम्भ है तो उस दिन से कलियुगाब्द ५१११ शुरू हो जाता है। इसके अतिरिक्त भारत के अनेक सम्वतों के नव वर्ष का पहला दिन यही है। जिनमें प्रमुख है विक्रमी सम्वत् और शक सम्वत्। २७ मार्च, २००९ की वर्ष प्रतिपदा से विक्रमी सम्वत् २०६६ तथा शक सम्वत् १९३१ का आरम्भ है।

विक्रमी सम्वत् के प्रवर्तक विक्रमादित्य के बारे में भारतीय समाज भली प्रकार परिचित है। इन्होंने विदेशी शक आक्रान्तओं को हरा कर देश में स्वराज की स्थापना की थी। इनके समय में देश सुरक्षित और समृद्ध हुआ। इनकी प्रजावत्सलता और न्यायप्रियता की अनेकों कथाएं सुनने को मिलती हैं। महाराजा विक्रमादित्य के बारे में सुविख्यात विद्वान राजनेता डॉ० सम्पूर्णानन्द के विचार यहां उल्लेखनीय हैं। उनके अनुसार विक्रमादित्य कौन थे, उनके राज्य का विस्तार कितना था, उनके जीवन में कौन कौन सी मुख्य घटनाएं हुई, उन्होंने कभी अश्वमेध यज्ञ किया या नहीं, उनका शासन काल किस समय से किस समय तक था, उनकी परिषद् में कौन कौन से विद्वान सुशोभित थे, यह सब प्रश्न महत्त्वपूर्ण है, परन्तु इनका महत्त्व विद्वानों के लिए है। साधारण भारतीय जिस राजा विक्रमाजीत से परिचित है, उनका महत्त्व ऐतिहासिक विक्रमादित्य से बहुत बड़ा है। 'जनश्रुति' और 'सिंहासन बतीसी' के विक्रमादित्य ऐतिहासिक खोज की अपेक्षा नहीं करते। यदि देश विदेश के विद्वान मिलकर यह व्यवस्था दे दें कि इस नाम या उपाधि का कोई भी नरेश नहीं हुआ तब भी लोकसूत्रात्मा जिस विक्रमादित्य को जानती मानती है, उनकी स्मृति सुरक्षित रहेगी। इसका कारण स्पष्ट है, जनता के लिए विक्रमादित्य व्यक्ति नहीं है, वे कई आदर्शों, कई विचारों के प्रतीक हैं। जनता के लिये विक्रमादित्य आदर्श भारतीय नरेश थे। भारतीय जनता राम, कृष्ण, अर्जुन, युधिष्ठिर, भोज और विक्रम के प्रति अत्यंत आत्मीयता एवं आदर का

भाव रखती है। विक्रम भारत के गौरव, उत्कर्ष, धर्म, त्याग, वैभव और ज्ञान के प्रतीक हैं।

उत्तर भारत के अन्य अनेक प्रान्तों की भांति हिमाचल प्रदेश में भी विक्रमी सम्वत् का ही लोक व्यवहार में प्रचलन पाया जाता है। इनमें चांद (चन्द्र) मास और सौर (सूर्य) मास दोनों का चलन है। चान्द्र मास में प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया आदि तिथियों तथा पूर्णिमा और अमावस्या का प्रयोग होता है। सौर मास में संक्रान्ति तथा एक, दो, तीन आदि प्रविष्टे प्रयुक्त होते हैं। यहां चान्द्र मास का आरम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को और सौर मास का आरम्भ बैशाख संक्रान्ति को मानते हैं। इन दोनों अवसरों पर नव वर्ष का स्वागत हर्षोल्लास से मेले और त्यौहरों के रूप में होता है।

महाराष्ट्र आदि प्रान्तों में विक्रमी सम्वत् के स्थान पर शक सम्वत् की प्रधानता है। शक सम्वत् में भी चान्द्र मास की तिथियों और सौर मास के प्रविष्टों का प्रयोग किया जाता है। शक सम्वत् के सौर प्रविष्टों के अनुसार २१—२२ मार्च को चैत्र सक्रांति होती है और वही दिन नव वर्ष का पहला दिन होता है। लेकिन लोक में मुख्य रूप में यहां भी चान्द्र मास के अनुसार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के पर्व को महाराष्ट्र, गोवा आदि प्रान्तों में गुडी पड़वा के नाम से मनाते हैं। गुडी पड़वा वहां प्रत्येक हिन्दू घर में एक दण्ड पर गुडी सजायी जाती है। गुडी को ब्रह्म ध्वज माना जाता है। लोक मान्यता के अनुसार गुडी के दिन भगवान राम के हाथों वानरराज बाली मारा गया था। जनता को बाली के आतंक से मुक्ति मिली थी। अत: बाली पर विजय के उपलक्ष्य को साथ जोड़ कर ब्रह्म ध्वज अर्थात् गुड़ी को विजय पताका भी कहा जाता है। बाद में शालिवाहन शक ने इसी दिन से शक सम्वत् को आरम्भ किया था। शालिवाहन के बारे में कहा जाता है कि यह आन्ध्र नरेश शातकर्णि शातवाहन के वंशज थे। एक मान्यता के अनुसार शालीवाहन का ही नाम पहले शातकर्णि था। शातकर्णि जब अपने मित्रों के साथ खेलता था तो प्राय: खेल स्थल के पास खड़े एक शाली नामक वृक्ष पर चढ़ जाता और उसकी एक शाखा पर बैठकर कहता देखो! मैं राजा हूं। यह शाखा मेरा वाहन है। इस प्रकार उसके लगातार यह खेल करते रहने से मित्रों ने उसे शालीवाहन कहना शुरू कर दिया और बाद में उसका नाम शातकर्णि के स्थान पर शालीवाहन ही प्रसिद्ध हो गया। इन्होंने अपना राज्य महाराष्ट्र में गोदावरी के किनारे प्रतिष्ठानपुर में स्थापित किया था। यहीं से उन्होंने शक शत्रुओं को पराजित करके पूरी तरह से देश से बाहर निकाल दिया था।

महाराजा शालिवाहन के सम्बंध में यह जनश्रुति भी प्रचलित है कि इन्होंने मिट्टी की मूर्तियों की सेना खड़ी करके उनमें प्राणों का संचार किया था। मिट्टी की मूर्तियों में प्राण भरने का तात्पर्य है कि इन्होंने निस्तेज पड़ी जन शक्ति में राष्ट्र सेवा ओर शूरवीरता का भाव जगा कर शत्रुओं पर विजय प्राप्त की थी और देश में सुख समृद्धि का शासन चलाया था।

इस प्रकार सम्वत् प्रवर्तक महाराजा विक्रमादित्य और शालिवाहन के अनुकरणीय आदर्श व्यक्तित्व के प्रभाव में वर्ष प्रतिपदा का दिन यह संदेश देता है कि सभी देशवासियों को राष्ट्र की सुरक्षा और समृद्धि के लिये हमेशा तैयार रहना आवश्यक है।

डॉ० केशवराव बलिराम हेडगेवार
वर्षप्रतिपदा के दिन भारत में अवतीर्ण

● **बाबा साहेब आपटे**

वर्ष प्रतिपदा महोत्सव हम लोग इस देश में प्रारम्भ से ही मनाते हैं। वर्ष प्रतिपदा स्फूर्ति एवं विजय का दिन है।

आक्रमणों का तांता

हमारे देश में विभिन्न आक्रामक बाहर से आए। उन सभी को हमने मार भगाया। इतिहास हमें यह बताता है कि हमारे देश पर जब यूनानियों का आक्रमण हुआ था, तब चन्द्रगुप्त मौर्य ने उन्हें इस देश की सीमाओं के बाहर ही नहीं भगाया अपितु इस देश की सीमाएं भी बढ़ाई। यूनानियों के समान शकों ने भी आक्रमण किये। किन्तु यह आक्रमण यूनानियों से भिन्न थे। शकों ने अपना राज्य देश के अन्दर काफी दूर तक फैलाया था। उनके आक्रमण की जड़ें काफी गहराई तक पहुंची थी। उज्जयिनी उनकी राजधानी थी। इस आक्रमण को हटाकर उनको आत्मसात् करने का काम शेष बचा था। आक्रमकों को देश के सांस्कृतिक जीवन में आत्मसात करने की परम्परा टूट गई थी। हमारी संस्कृति की यह विशेषता है कि हमने आक्रमकों पर केवल विजय ही प्राप्त नहीं की, उन्हें आत्मसात् भी किया। ***कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'*** का व्रत रखने वाली हमारी संस्कृति, गंगा की पावन धारा के समान सबको आत्मसात् कर निरन्तर बहती चली जा रही है। विक्रमादित्य ने शकों को अपनी संस्कृति में आत्मसात् करने का बचा हुआ कार्य पूर्ण किया। इसीलिये उन्हें 'शकारि विक्रमादित्य' कहा जाता है। जिस दिन यह कार्य पूर्ण हुआ वह दिन समाज के लिये एक विजय का दिन था। इसलिये उस दिन से शक संवत् की नई वर्षगणना शुरू हुई। हमारे समाज ने इस दिन 'वर्ष प्रतिपदा' को एक महोत्सव के रूप में मनाया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भी वर्ष प्रतिपदा को उत्सव का स्थान दिया है, क्योंकि संघ भी यह कार्य करना चाहता है।

शकों के बाद भी कई आक्रामक आए। मुसलमान आए, ईसाई आए। किन्तु पुरानी बातें हम भूल गए। हम आक्रामकों से लड़ते रहे, किन्तु उन्हें अपनी संस्कृति में आत्मसात् करने का कार्य अधूरा रह गया। उसकी श्रृंखला टूट गई। परिणामस्वरूप मुसलमान और ईसाईयों की संख्या आज भी बढ़ रही है। हिन्दू समाज कैसे बचेगा, यह

समस्या हो गई है। इस देश पर आक्रमण करते समय कितने मुसलमान आये होंगे? दस—बीस हजार। किन्तु आज वे करोड़ों हो गए हैं। इस बात को समझने वाला महापुरुष संघ के संस्थापक के रूप में इसी वर्ष प्रतिपदा के दिन भारत में अवतीर्ण हो, यह एक ईश्वरीय संकेत है। हमारे लोगों में अपने सामर्थ्य का विस्मरण हो गया है। लोग अपना स्वरूप भूल गये हैं। 'हिन्दू' शब्द जो एक राष्ट्र का, उसकी संस्कृति का, उसकी जीवन पद्धति का प्रतीक है, केवल ईसाई, मुसलमान आदि शब्दों की तरह उपासना—पद्धति नहीं है। 'हिन्दू' शब्द सम्पूर्ण संस्कृति का दिग्दर्शन करने वाला, विशिष्ट जीवन प्रणाली का साक्षात्कार करने वाला राष्ट्र वाचक शब्द है, यह लोग भूल गये हैं। इसलिये समाज को अपने स्वरूप का वास्तविक ज्ञान देने के लिये डाक्टर जी ने संघ की स्थापना की।

परिस्थिति निरपेक्ष कार्य

डाक्टर जी कहा करते थे कि संघ कार्य परिस्थिति निरपेक्ष कार्य है। यहां अंग्रेज शासक हैं या मुसलमानों के दंगे होते हैं, इसलिये हिन्दू संगठन होना चाहिये, ऐसा उन्होंने कभी नहीं कहा। वे सदैव कहा करते थे कि ***संगठित रहना, यह समाज धर्म है। जिस प्रकार पानी का धर्म बहना, अग्नि का धर्म जलना, उसी प्रकार समाज का धर्म संगठित रहना है।*** यदि समाज को जीवित रहना है तो उसे संगठित रहना ही पड़ेगा। इस सत्य को बड़े स्पष्ट एवं निर्भीक शब्दों में समाज के सम्मुख उन्होंने रखा। संघ की स्थापना उन्होंने एकदम अचानक ढंग से नहीं की। पहले उन्होंने अपने स्वयं के जीवन को कार्य के अनुकूल ढालने का प्रयत्न किया। समाज के लिये अपना जीवन—सर्वस्व अर्पण करना उनका एक स्थाई भाव बन गया था। वे कहा करते थे कि ***जिस प्रकार मनुष्य अपने परिवार के लिये स्वाभाविक रूप से काम करता है, उसी प्रकार अपने समाज के लिये भी कार्य करना मनुष्य धर्म है। संघ के सामने भी उन्होंने यही आदर्श रखा कि प्रत्येक व्यक्ति चरित्रवान, समाज कार्य में निष्ठा रखने वाला एवं देश के लिये जीवन जीने वाला होना चाहिये।***

देश के लिये मरने वाले तो बहुत थे। किन्तु देश के लिये जीवन जीने वालों का अभाव था। डाक्टर जी के एक मित्र ने अपने घर में एक चित्र के नीचे एक वाक्य लिखा था—*Teach us how to die* (हमें मरना सिखायें) । डॉक्टर जी ने यह चित्र देख कर कहा कि हम मरना तो जानतें हैं, किन्तु जीना नहीं जानते। इसलिये हमें *Teach us how to live* (हमें जीना सिखाइये) लिखना चाहिये।

उनका अपना कोई व्यक्तिगत जीवन नहीं था। वे देश के लिये जीते थे। स्व. सेनापति बापट की कविता उन्हें अत्यंत प्रिय थी। इस कविता में कहा गया है कि—'देशचा

संसार माझे शिरावरी' यानी देश का भार मेरे सिर पर है। किन्तु डाक्टर जी की वह बात लोग समझ नहीं सकते थे क्योंकि लोगों में देश—भक्ति का ही अभाव था। लोगों को संघ के बारे में यही धारणा थी कि अंग्रेजों को हटाने के लिये या मुसलमानों के दंगे बंद करने के लिये संघ की स्थापना हुई है। किन्तु ऐसा नहीं था। 'समूचा देश मेरा परिवार है,' एवं उसके लिये कंधे से कंधा लगाकर एक साथ काम करना मेरा धर्म है, यह सिखाने के लिये संघ की स्थापना हुई।

सतत आवश्यकता

अंग्रेजों के चले जाने के बाद भी कुछ लोगों की यह धारणा थी कि अब संघ की आवश्यकता नहीं, उसे समाप्त किया जाना चाहिये। किन्तु संघ चलता रहा। आज भी हम यह देखते हैं कि हमारे बड़े बड़े नेताओं में भी निष्कलंक चारित्र्य नहीं है, राष्ट्र— भक्ति नहीं है। स्वतंत्रता प्राप्ति के इतने वर्षों के पश्चात् भी देश पर बाहरी आक्रमण का भय बना हुआ है। देश का अंदरूनी जीवन सड़ा हुआ है। जाति, प्रांत तथा भाषा के झगड़े हैं, दरिद्रता है। देश की स्थिति गांव की उस पुरानी धर्मशाला के समान हो गई है जिसका उपयोग सब करते हैं, किन्तु जिसके जीर्णोद्धार के लिये कोई आगे नहीं आता। आज अपने समाज में समाज का काम करने के लिये कोई नहीं आता। कौन झंझट मोल ले? 'हम भले हमारा काम भला' इस प्रकार आज भी लोग सोचते हुए दिखाई देते हैं। ऐसे ही लोगों को आज समाज में सज्जन कहा जाता है। समाजिक कार्य करने वालों की स्थिति उस जुलाहे के समान हो गई है, जिसे दो व्यक्तियों के झगड़े में पड़ने के कारण अपने जीवन से हाथ धोना पड़ा। बेचारा झगड़ा छुड़ाने गया और मारा गया। 'काम छोड़ जुलाहा जाए नाहक अपनी जान गंवाए' की कहावत चरितार्थ हो गई। इस प्रकार सामजिक कार्य करने वालों को आज बुरा कहा जाता है। एक संस्कृत सुभाषित में भी कहा गया है—'अनारम्भो हि कार्यणाम्' आज काम का आरम्भ न करना ही बुद्धिमानी है। जबकि वास्तव में समाज के बारे में न सोचना ही निर्बुद्धता माननी चाहिये। लोगों में यह मनोवृति अंग्रेज व मुसलमानों के कारण नहीं आई? वह बहुत पुरानी है, सदियों से है। लोगों में समष्टि धर्म का अभाव था, इसीलिये मुट्ठी भर अंग्रेज यहां राज्य कर पाए। डाक्टर जी की दृष्टि सूक्ष्म थी। वे स्वयं डाक्टर थे, उन्होंने राष्ट्र की इस बीमारी का अचूक निदान किया।

उपकार नहीं, कर्तव्य— भावना

किन्तु यह एक बात रही। समाज रूपी धर्मशाला का जीर्णोद्धार करने के लिये कुछ लोग अगर प्रयत्न करते भी हैं, तो कुछ समय के बाद उनकी ऐसी धारणा हो जाती है

कि वे मानों किसी पर काई उपकार कर रहे हैं। उन्हें अपने समाज कार्य का अभिमान और अहंकार आ जाता है या आपसी मतभेदों के कारण निरुत्साहित होकर वे काम बंद कर देते हैं। हमारे सार्वजनिक जीवन में ये तीन दोष आज भी पाए जाते हैं। आज भी हम विदेशों के हाथ की कठपुतली बनते हैं, इतना ही नहीं देश के अलग होने की बात भी दिखाई देती है। इसके विपरीत संघ में लाखों लोगों का ऐसा व्यक्तिव निर्माण किया गया हैं, जिस पर सम्पूर्ण देश को अभिमान है। संघ का स्वयंसेवक समाज का ऋण जानता है एवं उसे चुकाने के लिये वह अपना कार्य करता रहता है। उसमें अहंकार नहीं होता। वह अपने उपकार की भावना से काम नहीं करता, मतभेद और आपसी झगड़ों के कारण उसका काम बंद नहीं होता, क्योंकि वह कंधे से कंधा लगाकर काम करना जानता है। इस प्रकार स्वयंसेवक निर्माण करने का श्रेय उस महापुरुष को है जिसने संघ की स्थापना की है।

डॉक्टर जी का जीवन पूर्ण रीति से अपनाकर अपने आप को उस प्रकार बनाना यही स्वयंसेवक का कार्य है। यह भाषणों और लेखों से नहीं होगा। उसके लिये प्रतिदिन शाखा के संस्कार ही आवश्यक है। उपर्युक्त तीनों दोषों से मुक्त लोग एकाएक नहीं बनते। उसके लिये वर्षों तक संस्कार ग्रहण करना पड़ता है, यह हम लोग जानते हैं, उसके लिये नित्य की शाखा आवश्यक है।

हर ग्राम-नगर-घर में हेडगेवार

आज यद्यपि संघ ने ऐसे लाखों स्वयंसेवक निर्माण किये हैं, फिर भी कार्य बहुत थोड़ा हुआ है। समाज को अभी भी कोई भी भड़का सकता है। समाज भोला है। वह संघ कार्य जानता नहीं, समझता नहीं। डॉक्टर जी कहा करते थे कि सौ व्यक्तियों में कम से कम एक स्वयंसेवक हो। यह डॉक्टर जी की अन्तिम इच्छा थी। उसे पूर्ण करना हमारा कर्त्तव्य है। उसके लिये पहले अपने आप को तैयार करना होगा। डॉक्टर जी से किसी ने पूछा कि आप डाक्टरी तो करते नहीं, फिर उसकी परीक्षा क्यों पास की। उन्होंने उत्तर दिया कि समाज उसी की सुनता है, जो लिखा—पढ़ा है, जिसकी प्रतिष्ठा है। इसीलिये मुझे अपनी बात समाज को बताने के लिये परीक्षा पास करना जरूरी था। इस प्रकार अपने आप को ढालकर संघ की शाखाएं हमें खड़ी करनी है। एक एक स्वयंसेवक एक एक ग्राम में शाखा खड़ी करे। संघ कार्य से अछूता एक भी घर या एक भी ग्राम न रहे। इस प्रकार के संकल्प कर हम कार्य में जुटेंगे, तभी हमारा उस महापुरुष का अनुयायी कहलाना सार्थक होगा।

New Year Day- Scientific Exploration

- Dr. Chander Prakesh

As stated in Vedic scriptures, along with creation of universe, science to time also took birth. Science of time is based on science of astronomy i.e. Rotation of various planets round their own axis or around other planets. The planetary rotation gave birth to various time units e.g. Day, weeks, Month and year followed by decade, century and Millennium. Day is further subdivided into hours, minutes, seconds and milliseconds etc. Calendar comprises of information about days comprising both dates and names of days, weeks and months to meet personal demands, social reasons, calculation of festivals, historical or political events, legal and administrative conveniences. Nearly all religions, ethnic groups inhabiting various geographic zones or regions and civilizations off and on developed their own calendars for different reasons-mostly empirical and not based on science of astronomy. Such calendars were enforced or became popular in areas of their influence. As time passed, globalization took root creating dire necessity of a universal or global calendar. At present, Gregorian calendar is universally accepted as universal/global Calendar because of dominance of European or western culture/civilization in present world. Reasons for celebration of New Year day as cited in ancient Vedic scriptures are :

1. Contemplation on the achievements and failure of the last year.
2. Planning for the future.
3. Spiritual leader laid stress on 'thanks-giving' to God

for all benevolence blessed in last year and prayers for more in upcoming year.

Unfortunately globalization and commercialization that is dominant star in present century, has succeeded in complete transformation of system of celebration for New Year day.

Vedic/ Hindu Calendar

In Vedas, it has been stressed that human is a part of universe and is related to in various aspects. This relationship is bi-directional. One of the most prominent sciences developing out of this relationship is science of Kala or time called as Kala Vigyan (काल विज्ञान). Vedic Calendar is by-product of this science and will be discussed under following heads :

1. Origin of Time

Following vedic mantra is vedic sandhya is recited daily. Below your will find both Sanskrit and English translations:

om ritamach satyanch abhida tapaso dhi jayat !
Tatho Ratri jayata tatah samudro arnavah!!
Om samudrad arnavad adhi sambatsaro ajayata!
Ahoratrani vidhad vishvasya mishato vashi!!
Om suryachanramasau dhata yathapurvam Akalpyalt!
Divam cha prithvi cha antarakhashamatho Svah!!

(Rig Veda 10,160,1-3)

The eternal laws of nature (Ritum) and of Truth (Satyam) are the result of arduous penance (Tapsya). Thus profound darkness engulfs and activity starts in the form of bubbles in the plasmic ocean. From the plasmic ocean, the time parameters like day and night and year etc appear as per controller of every moment. The sustainer or creator, as in the previous cycle, creates Sun and the Moon, the celestail region, the earth, ,mid space and the region of bliss.

2. Cyclic Universe

The above Mantra states that present universe was created as per rules that were followed in previous creations meaning thereby that was an earlier universe that underwent dissolution prior to creation of present universe. Thus the whole process is cyclical in nature. This is the basic philosophy enunciated Vedas that governs all the constituents of the universe. Revolving planets whether around its own axis or round another planet are byproducts of cyclic nature of universe. Same philosophy pervades time, space and all living beings.

3. Jyotish Vedanga

Joytish vedanga is one of the six vedangas. Vedanga is translated as limb of Vedas. it deals with science fo time, astronomy and astrology. As advances were made in sciences of astronomy and time, more scriptures were compiled called as "Sidhantas". Most popular one is "Surya Sidhanta" as it presents a simplified and an updated version. Scientists like Aryabhatta, Varahmihira and Bhaskra made great contribution in advancement of "Kala Vigyan." science of calendar from very ancient time, helped religious leaders to calculate dates and timings of various religious events inclusive of festivals. But many kings floated Calendars for their personnal glorification. King Vikramaditay started Vikramaditya Samvat to commemorate his coronation. Few decades later king Salivahana from south India commemorated his victory over Vikramaditya by floating Saka Calendar. Former was popular in North India while latter prevailed in South India.

4. Unit of measurement of time

In Jyotish Vedanga it is stated that unit of measurement of time is determined by time taken by the following planetary rotations.

1. Day indicates the time taken for completion of rotation by earth around its on axis while revolving in solar elliptical axis.
2. Month indicates time taken by moon to complete its rotation around earth.
3. Year indicates time taken by earth to complete rotation on the elliptical axis around sun .

Ancient scriptures state that the present universe was created nearly 4.5 billion solar years ago. Hence any approved system of measurement of unit of time should cover whole period since the inception of universe. Ancient sages and seers developed system along with different terminology to meet this contingency. As it was based on mathematical calculations, it stood various scientific tests of time.

a. Kalpa (Brahama day) is composed of 4.32 billion solar years. Two Kalpas comprising both day and night form one complete Brahma day.
b. Brahma Day is further divided in to 1000 Mahayuga.
c. Each Mahayuga is further divided into four Yugas of various durations. Yuga stands for "era" in modern terminology.

Table Showing Yugas and ther Duration

No	Name of Yuga	Duration in solar yeas
1.	Satya/krita	17,28,000
2.	Treta Yuga	12,96,000
3.	Dwaper Yuga	8,64,000
4.	kali Yuga	4,32,000

Mahayuga comprising of above four Yugas, covers 43,20,000 solar years. For the calculation of present Gregorian year i.e. 2009 in the Kaliyugabda calendar, it will be 5111 Kaliyugabad year.

Name of the months

in Vedic Calendar are Chetra, Vaishadha, Jyaishtha,

Ashadha, Sharavana, Bhadrapada, Ashvina, Kartika, Margshishirsha, Pauasha, Magha, and Phalguna.

Scientific explanation for Chetra month to be the leading month of Vedic Years (first month) is that during its transit, Sun is located above the equator of earth and so axis of earth is tilted neither towards nor away from the sun. This event has been called as "Vernal Equinox" in astronomical terminology.

As this event starts on first day of Chetra month, it is considered as New Year Day in vedic Calendar.

Names of the day in a week

Week contains seven days. There are 4 weeks + 2days in a month (30 days) while Vedic year comprises 51 weeks+3 days (360).

Days of week are called as vaasara or vaar of various days have been derived from Sanskrit/Devnagri names of various planets while names of days in Gregorian Calendar have multiple sources i.e. Names of planets in Latin/Greek/English. The names of seven days as per Vedic Calender are Ravi Vaar, Som vaar, Mangal vaar, Budh Vaar, Bhiahaspati Vaar, Shukara Vaar and Shanivara which indicate the planet Sun, Moon, Mars, Mercury, Jupiter, Venius and Saturn respectively.

Some additional terms like Tithi, Vaasara, Nakshatra, Yoga and karana used in the Vedic Calendar. They all indicate the relationship between sun, moon and earth during their rotation in the solar elliptical axis.

Gregorian Calendar

Calendar being followed all over the globe is called as Gregorian calendar as it has been named after Pope Gregory xiii who approved it in year 1562. It is modified form of Julian Calendar developed by Julius Caesar. Approval by Pope is the reason behind calling it Christian or even Catholic Calendar. Many sects of Christianity like Protestant

or Orthodox Christian Churches still use Julian calendar for calculation of dates for their festivals etc. Start of this calendar is related to birth of Jesus Christ because any event occurring prior to the start of calendar carries the symbol of B.C. (before Jesus Christ) counted in declining order). Similarly A.D. is a symbol that signifies that event occurred after the birth of Jesus Christ. AD is an abbreviation of a Latin word "anno domino" meaning "in the year of Lord".

Basic unit of time is "day" in this calendar and year constitutes 365 days while month may have variable days i.e. 28/29/30. Week comprises of seven days. Day starts from midnight and ends in the next midnight. Genesis of leap year is that rotation of earth around sun takes 365 days, 5 hrs, 48 minutes and 40 seconds and not 365 days as shown down in annual calendar. Thus there is deficiency of app. $1/4^{th}$ day. So after every four years, one day is added to partially compensated for the above deficiency arising during calculation of calendar. This year is called leap year and month of February has 29 days. Though 100 year is divisible by 4 but is not considered a leap year. It is only when year is divisible by 400 will be considered a Leap year. This formula helps in achieving the main objective of Leap Year.

Gregorian calendar has gradually evolved from pre-existent calendars like Egyptian, Babylon, Roman and Julian calendars and is not based on any formulae scientifically proved. Following examples testify the above statement:

1. During Roman Empire, two new months were introduced i.e July and August by Roman scholars. July is to commemorate rise of Julius Ceasar as Roman dictator while August after Roman emperor (Augustus).
2. Names of the months have been derived from

various Greek or Latin deities, emperors and/or their numerical order in calendar. No uniform principle has been followed.

3. Number of days in a month are very variable; some months have 30 days while others have 31 days except February with 28 days in non-leap year and 29 days in leap year. Unscientific nature of this formula is further proved by the story of king Augustus who increased one day in August named after him to 31 days to serve his ego. He did not want any month should have more days than month of August.

4. Reason for declaring January, as first month is not clear except that earlier Roman and Julian calendars had January as first month of the year. It is hypothesized that January 1st is the day when Roman Empire was created.

5. As is evident from the terms BC and AD used in enumeration of year, Gregorian calendar is realated to birth of Jesus Christ. while Jesus birthday is celebrated on December 25. January 1st that falls only 6 days after Christmas is not given the distinction of being holy because of birthday of Jesus Christ, Common sense demands that Christmas day should have been declared as New Year Day.

Indian National calendar - Saka Calender

Before independence, nearly thirty calendars were in vogue. These statistics do not cover religious calendars followed by varies religions like Islam, Hebrew, Parsi and Zoorastan etc. British Government introduced Gregorian calendars for Administrative reasons. Government of India constituted a parliamentary committee in 1952 to deliberate on various aspects of the issue of calendar and make recommendations for single calendar to be followed to strengthen unity and to bring uniformity in the country without hurting the religious or cultural sentiments of various ethnic and religious groups. Parliamentary

committee recommended for adoption of Saka calendar with certain modifications. Committee even laid down guidelines for calculation of dates for festivals and religious holidays. Indian government accepted the recommendations and enforced them in 1957. Saka calendar is discussed in detail below :

1. Saka Calendar is luni-solar while Vedic calendar is lunar. Luni-solar calendar is based on moon's celestial movements that in a way closely approximate the sun's (apparent) celestial movements.

2. Numbering of year. Year 0 of Saka calendar is equivalent to 78 AD of Gregorian calendar. Thus 2009 of Gregorian calendar is 1931 year of Saka.

3. Duration of year is same in both Saka and Gregorian Calendar i.e. 365 days 5 hrs. 48 minutes 40 seconds. So leap year forms part of saka calendar.

4. Name of months is the same as in Vedic calendar because "Nam Karan Sanskar" of months in Vedic Calendar is based on scientific principle as discussed earlier in Vedic Calendar.

5. To conform to Solar calendar, numbers of days in each month were changed. One day was increased in 5 months (from Vaishakh to Bhadrpad-2nd to 6nd months) increasing their strength to 31 days while rest of months had 30 days as in Vedic calendar. These months have been selected because of slower movement of Sun in the ecliptic in this period of time.

6. Chetra month was considered as the first month of Saka Year that comes in the months of March/ April of Gregorian calendar. As explained above, Chetra month corresponds to astronomical event of "Vernal Equinox" when sun is exectly over the equator of the earth that happens to be March 22. So first day of Chetra corresponds to March 22 in non leap year.

7. Chetra month comprises 30 days. During leap year and extra day is added to raise its strength to 31 days. In leap year first day of Chatra month falls on March 21 because of addition of one day in February in Geregorian calendar, results in preponing of vernal Equinox to March 21.

8. First day of Chetra month is accepted as New Year Day. It is considered very auspicious because of following reasons.

A. According to Purana, Universe was created on this day.

B. Famous Emperor Vikaramaditya held his coronation on this day.

C. Maharishi Swami Dayanad Saraswati laid the foundation stone of first Arya Samaj in Mumbai on this day.

In conclusion, it can be stated that Saka calendar as enforced by Indian government is more scientific then Gregorian calendar. But unfortunately only lip sympathy is given to this calendar and it appears on the left corner on the top. That is so mostly calendar printed by government agencies. Whole nation seems to be infatuated by western civilization. As explained above New year is still being celebrated as per propaganda by commercial organizations. It is estimated that nearly Rupee 5 billions are spent in India. Let us open our eyes and take a resolve on this New Year Day to follow the advice by Maharishi Swami Dayanand Saraswati of Back to Veda. Hence Versh Pratipada of Chetra Mass is the New year of Kaliyuga, Saka Samata, Vekrami Samta. Once it is achieved, it will signal down fall of invading western culture under the garb of globalization that has overwhelmed us. 1st January New year eve is symbol of imperialism which has nothing to do with our national culture or tradition.

Vice-President
D.A.V. College Managing Committee

✍ अन्वीक्षण

भारतेश्वर पृथ्वीराज चौहान

का

तराईन के द्वितीय युद्ध में हारने का रहस्य

● सुश्री चारू मित्तल

भारत के अंतिम हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज चौहान के जीवन वृत्त पर दो महत्त्वपूर्ण काव्य ग्रंथ—पृथ्वीराज रासो और पृथ्वीराज विजय लिखे गये हैं। पृथ्वीराज रासो में तिथियों में विसंगतियां होने के कारण विदेशी और उनके भारतीय इतिहासकार अनुयायियों ने इसे भाट का मनगढ़न्त काव्य कह कर उपेक्षित कर दिया और 'पृथ्वीराज विजय' का अध्ययन नहीं किया। इस कारण पृथ्वीराज चौहान इतिहास के धरातल पर उपेक्षित चरित्र बनकर रह गया।

हिन्दुस्तान की शिक्षा संस्थाओं में पृथ्वीराज चौहान के बारे में पढ़ाया जाता है कि पृथ्वीराज की कन्नौज के राजा जयचन्द से शत्रुता थी और इस कारण जयचन्द ने मुहम्मद गौरी को पृथ्वीराज पर आक्रमण करने के लिए बुलाया। जयचन्द ने पृथ्वीराज चौहान को हराने के लिए मुहम्मद गौरी की सहायता की। इस कारण पृथ्वीराज तराईन के द्वितीय युद्ध में हार गया। परंतु यह वास्तविकता नहीं है। पृथ्वीराज भारत का सम्राट था। जयचन्द उसके सामने कुछ भी नहीं था। पृथ्वीराज ने जयचन्द को अनेक युद्धों में धूल चटा रखी थी। पृथ्वीराज के हारने का कारण मुहम्मद गौरी भी नहीं था। अत: पृथ्वीराज के हारने के रहस्य को जानने के लिए पृथ्वीराज को जानना आवश्यक है।

पृथ्वीराज का जन्म और शिक्षा

पृथ्वीराज के पिता का नाम सोमेश्वर तथा माता कपूरी देवी थी। पृथ्वीराज का जन्म विक्रमी संवत् १२२३ (ईसवी ११६४) को गुजरात की राजधानी पाटन में हुआ। पृथ्वीराज की बुद्धि तीक्षण थी। वह भारतीय १४ विद्याओं और ६४ कलाओं का ज्ञाता था। इस का उसने अतिसूक्ष्म प्रशिक्षण प्राप्त किया था। साथ ही छ: भाषाओं – संस्कृत, प्राकृत, मागधी, शौरसेनी, पेवाशी और अपभ्रंश का ज्ञाता था। वह धर्मशास्त्र, मीमांसा, गणित, विज्ञान और संगीत विद्या में भी पारंगत था।

युद्ध विद्या

घुड़सवारी, गज संचालन और शास्त्र विद्या में वह पूरी तरह निपुण था। धनुर्विद्या विशेषता शब्दभेदी बाण चलाने में अर्जुन के बाद पृथ्वीराज चौहान का ही नाम आता है। तलवार चलाना, अश्व पर से शत्रु पर भाले से प्रहार करना, ढाल से बचाव करना वह इन

सब युद्ध विद्या में सिद्धस्त था। घुड़सवारी करना, व्यायामशाला में जाकर दण्ड–बैठक, मुद्गल, कुश्ती आदि वह नियमित करता था। प्रतिदिन आखेट को जाता था। वहां शेर और बघेरे को धनुष से मारना तथा घोड़े पर सवार होकर भाले से जानवरों का शिकार करना उसकी दिनचर्या का हिस्सा था। इससे व्यायाम होता था। घोड़े की सवारी और भयानक जानवारों को मारने दोनो का ही अभ्यास होता था।

पृथ्वीराज ३६ प्रकार के शस्त्र–अस्त्र धारण करता था। इस प्रकार वह विभिन्न विद्याओं, कलाओं, धनुर्विद्या, युद्ध विद्या आदि राजनीति, कूटनीति से युक्त एक उद्धभट योधा, कुशल सेनापति महान विद्वान था। यह आश्चर्य ही नहीं बल्कि दुख की बात भी है कि इतिहासकारों ने ऐसे अद्वितीय विद्वान की ही नहीं अपितु अतुलनीय वीर की उपेक्षा की।

दिल्ली दरबार

सम्राट पृथ्वीराज चौहान के दिल्ली दरबार में भारत के भिन्न–भिन्न राज्यों के राजा, उनके सरदार, सेनापति और इनके अतिरिक्त देश के चुने हुये विद्वान भी प्रतिष्ठित सदस्य थे। राजनीति, कूटनीति, धर्म, दर्शन, और अन्य महत्त्वपूर्ण विषयों पर दरबार में चर्चायें और संवाद होते थे।

जम्मू के राजा और पृथ्वीराज चौहान

जम्मू के राजवंश से चौहानों की रिश्तेदारी थी। जम्मू का राजा बज्रदत ७० वर्ष राज्य करने के बाद मृत्यु को प्राप्त हो गया। उसके दो पुत्र थे। बड़े का नाम बृजदेव और छोटे का नाम रामदेव था। पिता की मृत्यु के बाद बृजदेव जम्मू का राजा बना। ये दोनों भाई बड़े बहादुर थे। पृथ्वीराज के मोसेरे भाई होने के कारण वे दोनों भाई दिल्ली दरवार पहुंचे। पृथ्वीराज ने उनका बड़ा आदर सत्कार किया और दोनों को अपने दरबार का प्रतिष्ठित सदस्य बना लिया। बृजदेव का विवाह भी चौहान वंश में हुआ था। अत: वह चौहान वंश का दामाद था।

सम्राट पृथ्वीराज ने इन दोनों भाईयों को कांगड़ा राज्य विजय करने के लिये कहा। उन्होंने उस राज्य को आसानी से जीत लिया। पृथ्वीराज ने उसे अपने साम्राज्य में नहीं मिलाया, अपितु उसका पश्चिम भाग जम्मू के राज्य में मिला दिया और बाकि राज्य बृजदेव के भाई रामदेव को दे दिया।

बृजदेव बड़ा शूरवीर था। पृथ्वीराज ने अपने साम्राज्य की स्थापना के लिए जितनी भी लड़ाईयां लड़ी उसमें बृजदेव ने शूरवीरता के बड़े बड़े कीर्तिमान स्थापित किये। इस कारण राजस्थान के महायोद्धा हमीरराय की उपाधि बृजदेव को प्रदान की। अब उसका नाम हमीर देव व हमीर राय हो गया। उसकी वीरता की गाथाएं पूरे हिन्दुस्तान में फैल गयी।

पृथ्वीराज का राज दरबार

एक दिन राजदबार में हमीर राय (बृजदेव) के शौर्य की गाथायें चल रही थी। सारा राजदवार खचाखच भरा हुआ था परंतु हमीर राय दरबार में नहीं था। हमीर राय के शौर्य की प्रशंसा जीतराय परमार जो पृथ्वीराज का मुंह लगा था, सह नहीं सका। वह जोश में आकर हमीर राय के बारे में जोर जोर से अपशब्द कहने लगा। इनता ही नहीं अंत में उसने हमीर राय को कुत्ते की संज्ञा दे दी। उस समय पृथ्वीराज ने उसे रोका नहीं। इतना बड़ा पराक्रमी सेनापति का अपमान वह भी सम्राट के समक्ष और हमीर राय की अनुपस्थिति में हुआ।

हमीर राय दिल्ली से बाहर गये हुये थे। उनको सारी घटना का पता लग गया था। वह इस घटना को सुनकर सीधा दिल्ली न आकर अपने छोटे भाई रामदेव के पास कांगड़ा चला गया। जब पृथ्वीराज को इस बात का पता चला कि हमीर राय नाराज़ होकर अपने भाई के पास चला गया तो पृथ्वीराज ने उसे बुलाने के लिए कांगड़ा अपना दूत भेजा। हमीर राय न ही वापिस दिल्ली आया और न ही सम्राट को कोई उत्तर दिया।

चंद वरदाई कांगड़ा में

पृथ्वीराज इस बात से चिंतित हो गये थे और अंततः उसने अपने सखा, सेनापति, कवि चन्दवरदाई को हमीर राय के पास अपना पश्चाताप का पत्र देकर कांगड़ा भेजा। एक पूरा महीना चंद वरदाई कांगड़ा में रहा। पृथ्वीराज का पत्र हमीर राय को दिया। पत्र में पृथ्वीराज ने लिखा था कि मेरे से गलती हो गयी है। मैंने उस समय जीत राय को न ही रोका और न ही उसके लिए उसको सजा दी। मुझे क्षमा करो और वापिस दिल्ली आ जाओ। हमीर राय पर इस पत्र का कोई परिणाम नहीं हुआ। उसने चंद वरदाई को कहा कि जो मैंने सेवा की उसका फल मुझे कुत्ते के रूप में मिला। दिल्ली के दरबार में मैं कुत्ता बन गया हूं। मैं डोगरा राजपूत हूं। मैंने कसम खाई है कि मैं पृथ्वीराज को धूल चटा कर रहूंगा। चंद वरदाई एक महीने तक हमीर राय को मनाता रहा। पृथ्वीराज दिल्ली दरबार में तुम से क्षमा मांगेगा परंतु वह नहीं माना। चंद वरदाई ने हमीर राय को कहा कि व्यक्ति प्रतिष्ठा से देश बड़ा होता है। यदि आप नहीं मानोगे तो तुम भी डुबोगे और पृथ्वीराज भी मरेगा। देश भी गुलाम हो जाएगा।

इधर हमीर राय ने मुहम्मद गौरी को पत्र लिखा कि तुम आओ और पृथ्वीराज पर आक्रमण करो, मैं तुम्हारी सहायता करूंगा। गौरी को ऐसा सुविधाजनक साथ मिल गया और वह गजनी से लाहौर की ओर चल पड़ा। जैसे ही इस बात का पता चंद वरदाई को चला वह वैसे ही कांगड़ा से दिल्ली के लिए प्रस्थान कर गया। चंदवरदाई ने सारी बात पृथ्वीराज को बताई और यह सूचना भी दी कि हमीराय ने गजनी से मुहम्मद गौरी को बुला भेजा है। हमीर राय गौरी की सहायता के लिए अपनी सेना लेकर लाहौर जा रहा है। अब युद्ध के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नही बचा था।

दिल्ली में युद्ध की तैयारियां शुरू हो गयी। पृथ्वीराज ने अपने सेनापति पारस राय पुंडीर को कहा कि मुहम्मद गौरी को हम बाद में देखेंगे पहले हमीर राय को शीघ्रातिशीघ्र

लाहौर जाने से रोक दो। वह किसी भी हालत में लाहौर नहीं पहुंचना चाहिए। पुंडीर सेना को लेकर हमीर राय का मुकाबला करने के लिए पहुंच गया। दोनों में भंयकर युद्ध हुआ। दोनों ओर की बहुत बड़ी क्षति हुई। हमीर राय को रोकने में पुंडीर सफल न हो सका। हमीर राय सैनिक क्षति के वाबजूद भी लाहौर पहुंच गया।

लाहौर में पहुंचने पर मुहम्मद गौरी ने उसका बड़ा स्वागत किया और हिन्दू–मुस्लिम दोनों सेनाओं का संयुक्त सेनापति घोषित कर दिया। दोनों ओर की सेनाएं सन् ११९३ ईस्वी को तराईन के मैदान में पहुंच गयी। पृथ्वीराज से बदला लेने के लिये पहले हमीर राय ने अपनी सेना के साथ पृथ्वीराज पर धावा बोला। बड़ा भयंकर युद्ध हुआ। दोनों ओर से राजपूत सेना आपस में भिड़ी। हमीर राय पृथ्वीराज की सेना के सारे भेदों तथा उसके सेनापतियों की क्षमता, शक्तियां और कमजोरियों को जानता था। अत: भीषण संघर्ष में पृथ्वीराज के बड़े बड़े सरदार और सेनापति मारे गये। यह देखकर पृथ्वीराज ने अपने सेनापति चामुण्ड राय को बुलाकर यह आदेश दिया कि मुहम्मद गौरी को हम देख लेंगे। उसको हमने कई बार धूल चटाई है। तुम हमीर राय और उसके भाई रामदेव को जिन्दा पकड़ कर या उनके सिर को काट कर लाओ। चामुण्ड राय शेर की तरह गर्ज कर युद्ध में पुन: कूद पड़ा। फिर भयंकर युद्ध हुआ और हमीर देव सिर तलवार के एक वार से काटकर पृथ्वीराज चौहान के सामने ला कर रख दिया। दोनों भाई मारे गये। दोनों सेनाओं की बहुत बड़ी क्षति हुई। पृथ्वी राज के प्राय: सभी बड़े बड़े सेनापति और सरदार युद्ध में मारे गये। मुहम्मद गौरी की मुस्लमान सेना अभी ताजा और क्षति रहित थी। अब गौरी की मुस्लिम सेना युद्ध में कूद पड़ी। पहले से ही युद्ध में क्षतिग्रस्त पृथ्वीराज चौहान की सेना युद्ध के मैदान में टिक न सकी। पृथ्वीराज चौहान की हार हो गयी और पृथ्वीराज चौहान पकड़ा गया।

घर का भेदी लंका ढाये। हमीर राय व्यक्तिगत प्रतिष्ठा और देशद्रोहिता के कारण पृथ्वीराज हारा। मुहम्मद गौरी या जयचन्द के कारण नहीं। भारतीय इतिहास में जो भंयकर भूले हुई हैं उन सब में महाभंयकर भूल हमीर राय ने की। जिसने अपने व्यक्तिगत प्रतिष्ठा को अपने देश से बड़ा माना और एक मास चन्दवरदाई के समझाने पर तथा पृथ्वीराज द्वारा क्षमा मागने को भी दुर्लक्षित कर दिया।

युद्ध का परिणाम

दिल्ली पर मुसलमानों का राज हो गया।

पृथ्वीराज की बनाई सुरक्षा पंक्ति (जम्मू से गुजरात तक) टूट गई और परिणाम स्वरूप १०० वर्ष के अन्दर इस्लाम की आक्रामक सेनाएं दक्षिण से हिन्दूसागर तक पहुंच गयी।

उधर पूर्व में इस्लाम की जिहादी सैनिक टुकड़ियों ने असम के हिन्दू राज्य के दरवाजे पर दस्तक दे दी।

राजपूत युग

वर्तमान कलियुग के ३७०१ से कलियुग के ४३०१ (सन् ६०० से १२०० तक)

तक के काल को राजपूत युग भारतीय इतिहास में कहा जाता है। इसमें अग्नि वंश के चार राजपूत कुलों –प्रतिहार, परमार, सोलंकी और चौहानो ने ६०० वर्ष तक इस्लाम को एक भी कदम आगे बढ़ने नहीं दिया। ये देश की राजपूत शक्तियां इस्लाम को उखाड़ फेंकने में असफल क्यों हुई?

इसका उत्तर है राजपूतों की राजतीति बौद्धमत के अहिंसा से प्रभावित थी। यथा यदि शत्रु युद्ध में हार जाता है तो उसका पीछा नहीं करना।

२. शरण में आये हुये शत्रु को क्षमा कर देना।

३. शत्रु के प्रति दयालुता का भाव।

४. शत्रु के वचनों, आश्वासनों पर विश्वास

उदाहरण के लिए तराईन के प्रथम युद्ध में मुहम्मद गौरी हार कर पृथ्वीराज की शरण में आगया। भोले पृथ्वीराज ने उसे क्षमा कर दिया और उसे सुरक्षित गजनी जाने दिया।

शत्रु को क्षमा करना राजपूत वीरता का लक्षण मानते रहे। इसी कारण उन्होंने कई बार धोखे खाये।

पृथ्वीराज जब पकड़ा गया तो गौरी ने उसे छोड़ा नहीं। शत्रु शेष से यह आवश्यक है। गत् १२०० वर्षों के संघर्षों में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं। राजपूतों की नीति कोई हिन्दू नीति नहीं थी। इसी कारण वे इस्लाम को उखाड़ फैंकने में सफल नहीं हो पाये। इस नीति को शिवाजी ने ठीक किया।

हिन्दू राजनीति में शत्रु शेष, अग्नि शेष और सर्प शेष कभी भूल कर भी नहीं छोड़ना चाहिए। आपको रास्ते में सांप मिला। उसने आप को काटने का प्रयत्न किया। आप को उस पर दया आ गई और आप ने उसे छोड़ दिया। उसका स्वभाव काटने का है। उसको कभी जीवित नहीं छोड़ना चाहिए। अग्नि का स्वभाव जलाना है। उसे भी बुझा देना चाहिए। शत्रु बारे में नीतिकारों ने कहा कि शत्रु को कभी मत छोड़िये। इसकी तीन पीढ़ियां खत्म कर देनी चाहिए ताकि फिर कभी नया शत्रु उस में से पैदा न हो सके।

राजपूतों की उपरोक्त नीति का परित्याग कर शिवाजी ने पूर्णत: हिन्दू नीति को अपनाया और यही कारण है कि उन्होंने २५५ युद्ध लड़े। न कभी युद्ध में जख्मी हुये और न ही किसी युद्ध में हारे। यह दुनिया में उनका कीर्तिमान है। इसी नीति के कारण उन्होंने मुगलों की छाती पर पांव रखकर ३६० किलो मीटर लम्बा और १५० मील चौड़ा हिन्दू साम्राज्य स्थापित किया। यदि राजपूत शिवाजी की इस हिन्दू राजनीति को अपनाते तो इस्लाम को उसके उदगम स्थान अरब तक पहुंचा देते।

रीडर इतिहास,
बी–१०/७१९३,
भूतल, बसंत कुंज,
नई दिल्ली – ११००७०

✍ सामयिकी

भारत में प्रचलित जेहादी आतंकवाद का रहस्य

● डॉ. कुलदीप अग्निहोत्री

भारत में आतंकवाद के मूल में या तो इस्लामी शक्तियां हैं या फिर चर्च का अधूरा एजेंडा है। ये आतंकवादी घटनाएं कुछ निराश एवं हताश लोगों द्वारा की जा रही एकाकी घटनाएं नहीं हैं बल्कि इनके मूल में वैचारिक आधार है। वही वैचारिक आधार जिसे सैयद, अहमद खॉन, मुहम्मद अली जिन्ना और डा० मुहम्मद इकबाल ने १९४७ में भारत विभाजन के लिए प्रयुक्त किया था। १९४७ में भी कांग्रेस इस इस्लामी आतंकवाद का वैचारिक एवं व्यावहारिक स्तर पर मुकाबला करने से पीछे हट गई थी या फिर उसके आगे पराजित हो गई थी। कांग्रेस ने उस समय इस्लामी आतंकवाद का वैचारिक स्तर पर सामना करने के बजाये भय की स्थिति में हिन्दू कट्टरवाद की दुहाई मचानी शुरू कर दी थी। कांग्रेस का मानना था कि इस्लामी कट्टरवाद या आतंकवाद इसलिए बढ़ रहा है क्योंकि हिन्दू महासभा हिन्दू कट्टरता फैला रही है। कांग्रेस ने उस समय भी प्रतिक्रिया को क्रिया घोषित करके शुतुरमुर्ग की तरह रेत में मुंह छुपाने का प्रयास किया था और सोचा था कि शायद विभाजन टल जाये। उस समय ब्रिटिश सरकार भी चाह रही थी कि कांग्रेस इसी रास्ते पर चले क्योंकि वह जानती थी कि यह रास्ता अन्तत: विभाजन की और ही जाता है। भारत का विभाजन ब्रिटिश सरकार का उद्‌देश्य था। एक तो खंडित भारत कमजोर होता है दूसरे विभाजित भारत के एक खंड में गोरी शक्तियों की दखलअंदाजी पूर्ववत् बनी रहती।

भारत विभाजन के लगभग ६० साल बाद फिर लगता है कि इतिहास अपने को दोहराने की स्थिति में पहुंच गया है। इस्लाम खतरे में है, हिन्दू बहुल भारत में मुस्लिम समुदाय सुरक्षित नहीं है, उसके साथ मतभेद हो रहा है, इत्यादि जुमले एक बार फिर प्रयोग में लाये जा रहे हैं। इस बार यह अभियान कश्मीर से छेड़ा गया है। पिछली बार सिंध, बलोचिस्तान और पश्चिमी पंजाब इत्यादि से छेड़ा गया था। कश्मीर से अभियान छेड़ने का भी खास उद्‌देश्य है। क्योंकि कश्मीर घाटी मुस्लिम बहुल है। १९४७ से पूर्व नोआखली इत्यादि में डायरेक्ट एक्शन छेड़ कर वहां से हिन्दुओं को भगाने की साजिश की गई थी। इसी प्रकार इस बार कश्मीर से सभी हिन्दुओं को इस अभियान के शुरूआती दौर में ही भगा दिया गया। असम में यह प्रयोग अभी भी जारी है। कांग्रेस का व्यवहार इस बार लगभग उसी तर्ज पर है जिस तर्ज पर उसने १९४७ में विभाजन के समय किया था। कांग्रेस की प्रकृति, स्वभाव और प्रशिक्षण इस्लामी आतंकवाद का सामना करने का नहीं है। इसलिए उसको अपनी अकर्मण्यता से उपजे अपराध बोध के चलते मानसिक रूप से

मुक्त होने के लिए आतंकवाद में हिन्दुओं की जरूरत है। एक बार यदि हिन्दू आतंकवाद का अविष्कार कर लिया जाये तो कांग्रेस को अपने कार्यकर्ताओं को यह समझाने में सुविधा हो जायेगी कि देश में जो हो रहा है इसमें सारा दोष इस्लामी ताकतों का नहीं है। ये बेचारे हिन्दू आतंकवाद से डरे हुए लोग हैं और प्रतिक्रिया के कारण ही आतंकवाद में संलिप्त हो जाते हैं। कांग्रेस का सामान्य मतदाता और कार्यकर्ता भी आखिर हिन्दू ही है। इस्लामी आतंकवाद की वैचारिक साजिश को वह भी देख और समझ सकता है। कांग्रेस की यही चिन्ता है। अपने कार्यकर्ता को समझाने के लिए भी उसे हिन्दू आतंकवाद की जरूरत है। इसके साथ ही हिन्दू आतंकवाद एक और फ्रंट पर भी हथियार का काम कर सकता है। देश का सामान्य मुसलमान जो आंतकवादियों की गतिविधियों के कारण शक के घेरे में आ रहा था उसे प्रत्युत्तर में वार करने के लिए एक ढाल की जरूरत है ताकि वह इस्लामी आतंकवाद से उपजे प्रश्नों का उत्तर दे सके। कांग्रेस ने उसे हिन्दू आतंकवाद की यह काल्पनिक ढाल प्रदान कर दी है। संकट की इस घड़ी में और लम्बी वैचारिक लड़ाई में मुस्लिम समाज को जो ढाल कांग्रेस ने दी है उससे वह कृतज्ञ तो होगा ही। इसी कृतज्ञता में वह कांग्रेस को वोट देगा ।

१९४७ में जिस भूमिका में ब्रिटिश सरकार थी, अब २१ वीं शताब्दी में उसी भूमिका में अमेरिकी सरकार आ गई है। उसका उद्देश्य भी यही है कि भारत कमजोर बने और भारत के आसपास अमेरिकी सेना अपनी उपस्थिति बनाये रख सके। वैसे अफगानिस्तान और पाकिस्तान में यह स्थिति लगभग आ ही गई है। लेकिन १९४७ और २००९ की परिस्थितियों में एक महत्त्वपूर्ण अतंर आ चुका है। उस समय भारत की राजनीति के सभी सूत्र कांग्रेस के ही हाथ में थे। वैचारिक दृष्टि से नेहरू के नेतृत्व में कांग्रेस ब्रिटिश दर्शन, चिन्तन, व भाषा को ही स्वीकार करती थी। लेकिन उस परिस्थिति में ज़मीन आसमान का फर्क आ गया है। आज भारत की राष्ट्रवादी शक्तियां राजनीति के केन्द्र तक पहुंच चुकी हैं। इतना ही नहीं ६ वर्ष तक उन्होंने केन्द्र की सत्ता को संभाला भी है। अमेरिका को सबसे बड़ा दु:ख यही है कि भाजपा नेतृत्व की राष्ट्रवादी सरकार ने परमाणु विस्फोट कर अमेरिका की विश्व राजनीति की शतरंज की विसात पलट ही नहीं दी बल्कि भारत को भी विश्व के अग्रगामी परमाणु देशों में लाकर खड़ा कर दिया ।

चर्च और अमेरिका मिलकर भारत को घेरने की साजिश में जुटे हुए हैं। चर्च का उद्देश्य बहुत स्पष्ट है। वेटिकन के राजा पोप के अनुसार इस शताब्दी में उन्हें भारत का काम निपटाना है। क्योंकि पिछली दो सहस्राब्दियों में चर्च ने पूरे यूरोप और अफ्रीका के इतिहास, विरासत और संस्कृति को नष्ट करके वहां ईसाई मत को स्थापित कर दिया है। एशिया के अधिकांश हिस्से पर भी चर्च ने अपना मजहबी आधिपत्य जमा लिया है। शुरू में तो यूरोप ने ईसाइकरण का विरोध किया लेकिन कालांतर में वही यूरोप अफ्रीका और एशिया में मजहबी साम्राज्यवाद का हरावल दस्ता बना। जिन लोगों ने चर्च के इन अभियानों का विरोध किया उन्हें निर्दयता पूर्वक कुचल दिया गया। चर्च के दुर्भाग्य से

भारत उसके इस विश्वव्यापी अभियान के रास्ते में रोड़ा बनकर खड़ा हो गया।

अपनी इस साम्राज्यवादी लिप्सा में बींसवी शताब्दी में ही चर्च और अमेरिका एक जुट हो गये थे। इसलिए बचे खुचे देशों में ईसाई मजहब को स्थापित करने में अमेरिका अग्रणी भूमिका में उपस्थित हो गया है। परन्तु अमेरिका को इस प्रकार के देशों में दखलअंदाजी के लिए कोई न कोई तार्किक बहाना चाहिए। कोई ऐसा बहाना जिस पर लोग सहज ही विश्वास कर लें। अमेरिका ने इसके लिए आतंकवाद को बहाना भी बनाया और हथियार भी। अमेरिका का ऐसा कहना है कि दुनियां इस्लामी आतंकवाद का प्रहार झेल रही है और अमेरिका क्योंकि नवविचार और नवचेतना का देश है इसलिए वह इस्लामी आतंकवाद को समाप्त करना अपना कर्त्तव्य समझता है। चाहे इसमें उसके अपने सैनिक भी मर रहे हैं परन्तु इसके बावजूद अमेरिका मानवता के हित में इस्लामी आतंकवाद से लड़ रहा है। केवल अमेरिका में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व में वैसे, केवल रिकार्ड के लिए, अमेरिका को विश्व का सबसे पहला आतंकवादी देश कहा जा सकता है। सी०आई०ए० ने कितने लोगों की हत्या करवाई और कितने देशों की सरकारों को उल्टा पुल्टा, इसका लेखा जोखा उसकी पुरानी फाईलों में से निकल आयेगा। आज जिस इस्लामी आतंकवाद को लेकर इतना हल्ला मचा हुआ है उसको जन्म भी अमेरिका ने अफगानिस्तान में रूस को उत्तर देने के लिए दिया था। बाद में इसी आतंकवाद के बहाने अमेरिका अपने आर्थिक हितों के लिए ईराक में घुसा, फिर अफगानिस्तान में और अब उसकी सेनाएं आतंकवाद की खोज करते करते अपनी इच्छा से पाकिस्तान में भी चली जाती हैं। लेकिन चर्च और अमेरिका का निशाना तो भारत है। इस्लामी आतंकवाद के बहाने अमेरिका भारत में नहीं घुस सकता क्योंकि भारत इस्लामी आतंकवाद से पीड़ित देश है ।

भारत में घुसने के लिए अमेरिका को हिन्दू आतंकवाद की जरूरत है, इस्लामी आतंकवाद की नहीं। जब तक भारत में कांग्रेस की निर्वाध सत्ता रही तब तक न ज्यादा अमेरिका को चिंता थी न ही चर्च को क्योंकि भारत को मतांतरित करने की चर्च की योजनाओं में कांग्रेस सरकार सहायक रही, बाधक नहीं। परन्तु पिछले तीन दशकों से भारत का राजनैतिक घटना क्रम तेजी से परिवर्तित हुआ है । कांग्रेस केन्द्रीय सत्ता से पदच्युत हो गई है। यदि नहीं भी हुई है तो उसकी सत्ता में बने रहने की निरंतरता पर प्रश्न चिन्ह लग गया है। इसी अरसे में राष्ट्रवादी शक्तियां भारतीय राजनीति के केन्द्र में पहुंच गई हैं। अमेरिका और चर्च दोनों को लगता है यदि देर सवेर राष्ट्रवादी ताकतें भारत की सत्ता के केन्द्र में स्थापित हो गई तो भारत के ईसाइकरण में निश्चय ही वाधा उपस्थित हो जायेगी। इसका सामना करने के लिए विदेशी मूल की सोनिया गांधी को कांग्रेस के केन्द्र में स्थापित करने की रणनीति बुनी गई। यह ताकतें अपनी इस रणनीति में तो कामयाब हो गई लेकिन इनके दुर्भाग्य से कांग्रेस स्वयं ही सत्ता के केन्द्र से विच्युत होने की स्थिति में पहुंच रही है। यदि कल चर्च और अमेरिका के आगे ऐसा संकट उपस्थित हो जाता है तो

उनके आगे भारत में दखलअंदाजी का कौन सा रास्ता बचता है? यह रास्ता भारत की राष्ट्रवादी शक्तियों को आतंकवादी घोषित करने का ही है। भविष्य में यदि राष्ट्रवादी शक्तियां भारत का शासन सूत्र संभाल लेती हैं तो अमेरिका को यह कहने का अवसर मिल जायेगा कि भारत में आतंकवादी शक्तियों ने कब्जा कर लिया है। यह अमेरिका ने स्वयं ही घोषित किया हुआ है कि दुनियां में जहां भी आतंकवादी शक्तियां होंगी अमेरिका उनका पीछा करते हुए वहां तक जायेगा। वैसे भी सोनिया गांधी और चर्च को अमेरिका के आगे यह गुहार लगाते हुए कितनी देर लगेगी कि अमेरिका आगे बढ़ कर भारत को आतंकवादी शक्तियों के चगुंल से मुक्त करे ।

राष्ट्रवादी शक्तियों को और प्रकारान्तर से हिन्दू संगठनों को आतंकवादी के रूप में चित्रित करने की कड़ी में ही कांची कामकोटि मठ के शंकराचार्य को दीपावली की रात्रि को गिरफ्तार कर लिया गया था। दुनिया भर के मीडिया ने अमेरिका और इंग्लैंड की न्यूज एजेंसियों के माध्यम से हल्ला मचाया कि हिन्दू साधु संत और राष्ट्रवादी शक्तियां हत्यारे और गुंडे हैं। उसके बाद चर्च ने राष्ट्रीय संत वेदान्त केसरी स्वामी लक्ष्मणानन्द सरस्वती की जन्मआष्टमी के दिन पूर्व घोषणा करके हत्या कर दी। लक्ष्मणानन्द सरस्वती चर्च के मतांतरण आंदोलन में बाधा थे। यह एक प्रकार से राष्ट्रवादी शक्तियों को चर्च की चेतावनी थी कि जो उसके रास्ते में आयेगा उसका यही हश्र होगा। हत्या से पूर्व चर्च की रणनीति और योजना इतनी छिद्र रहित थी कि हत्या के बाद भी मीडिया मैनेजमेंट के माध्यम से दुनियां भर में यह प्रचारित किया गया कि संघ परिवार मतांतरित इसाईयों को आतंकित कर रहा है। मोमबती ब्रिगेड के एक नख दंत हीन सदस्य कुलदीप नैयर ने तो लक्ष्मणानन्द सरस्वती को खलनायक के रूप में प्रस्तुत करने का घटिया प्रयास किया ।

अमेरिका की यही नीति है कि किसी भी तरह से भारत की राष्ट्रवादी शक्तियों को कटघरे में खड़ा कर उन्हें नकारात्मक चित्रित किया जाये। अमेरिका की सरकार और अमेरिका का मीडिया इस काम में लम्बे अरसे से लगा हुआ है। अमेरिकी सरकार के संस्थान सी०आई०ए० की आधिकारिक साईट पर संघ परिवार से जुड़े संस्थानों को हिन्दू मिलीटैंट आरगेनाइजेशन घोषित किया हुआ है। गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी को वीजा न देने का उद्देश्य एक भी राष्ट्रवादी शक्तियों को कट्टरपंथी के रूप में चित्रित करना ही था ।

दिल्ली में कांग्रेस सरकार भी इसी तर्ज पर राष्ट्रवादी शक्तियों को बदनाम करने और किसी भी तरह से उन्हें आतंकवादी संगठन सिद्ध करने के काम में जुट गई है। इस काम के लिए उसने एक नया शब्द गढ़ लिया है — हिन्दू आतंकवाद। इस काम में उसने मीडिया के एक वर्ग की सेवाओं का भी प्रयोग किया है। स्टार टीवी इस काम में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। ए०टी०एस० इस काम में इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए काम करता लग रहा है। इसका अर्थ यह नहीं है कि जो विस्फोटों में भाग ले रहे हैं उन्हें पकड़ा न जाये या फिर उन्हें दंडित न किया जाये। लेकिन यदि प्रमाण नहीं है तो भी उन्हें यातनाएं दी

जाये, उनके बार बार पोलियो ग्राफ व नारको टेस्ट करवाये जाये तो इसका सीधा अर्थ यही है कि कि ए०टी०एस० के पास सबूत नहीं है। वह हिन्दू आतंकवाद का काल्पनिक हौआ खड़ा करने के लिए अंधेरे में तीर मार रही है। साध्वी प्रज्ञा ठाकुर का हलफनामा और उन्हें दी गई यातनायें आंखे खोलने वाली हैं। इससे सरकार का उद्देश्य भी स्पष्ट हो जाता है। ए०टी०एस० की रूचि जांच करने में कम और संघ परिवार और राष्ट्रवादी शक्तियों के खिलाफ सनसनी फैलाने में ज्यादा है। इसलिए वह ओपिनियन को प्रमाण बता कर मीडिया में भागता है। न्यायालय में तो जब केस जायेगा तब ही फैसला होगा कि क्या सच है और क्या झूठ है। लेकिन उससे पहले ही मीडिया के एक वर्ग का प्रयोग कर यदि अफवाहें उड़ा दी जायें तो कांग्रेस और अमेरिका दोनों का ही राजनैतिक उद्देश्य तो पूरा हो ही जायेगा। यदि कुछ व्यक्ति आतंकवादी गतिविधियों में संलिप्त हैं तो उनकी जांच होनी चाहिए। वे व्यक्ति चाहे हिन्दू हों चाहे मुसलमान हों फिर चाहे स्वामी लक्ष्मणानन्द सरस्वती की हत्या करवाने में संलिप्त चर्च के लोग हों। मालेगावं विस्फोट में जिन लोगों की संलिप्तता के प्रमाण मिल जाये, उनको दंड दिया ही जाना चाहिए। लेकिन सरकार का उद्देश्य मालेगांव विस्फोट की जांच का बहाना बनाकर यह स्थापित करना है कि हिन्दू भी आतंकवाद में लिप्त हैं। व्यक्तिगत दुस्साहस को सरकार संगठित हिन्दू आतंकवाद सिद्ध करना चाहती है। लेकिन उसकी असली मंशा तो राष्ट्रवाद की गंगोत्री संघ परिवार को घेरने की है। इसलिए वह कुछ व्यक्तिवादी दुस्साहसिक गतिविधियों को येन केन प्रकारेण संघ परिवार से जोड़ना चाहती है। इसी कड़ी में इन्द्रेश कुमार और प्रवीण तोगड़िया का नाम लिया जा रहा है। वैसे भी अमेरिकी मानसिकता के लिए यह अभियान नया नहीं है। पहले भी वह भारत के प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई पर सी०आई०ए० का एंजेट होने का आरोप लगा चुकी है। ए०टी०एस० द्वारा फैलाये जा रहे झूठ एवं अर्ध सत्यों ने उसकी विश्वसनीयता पर भी प्रश्न चिन्ह लगा दिया है। ए०टी०एस० अपनी जांच के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंची है कि समझौता एक्सप्रैस में हुए बम ब्लास्ट में कर्नल पुरोहित ने आर०डी०एक्स० मुहैया करवाया था। जबकि पुलिस की जांच पहले ही यह स्थापित कर चुकी है कि समझौता एक्सप्रैस में आर०डी०एक्स० का प्रयोग नहीं हुआ है। समझौता एक्सप्रैस में विस्फोट पाकिस्तान के इशारे पर हुआ था और आरोपी अभी भी जेल में बंद है। अब ए०टी०एस० जो कह रहा है उसका अर्थ है कि वह ब्लास्ट पाकिस्तान ने नहीं करवाया और ब्लास्ट के आरोपी को जो जेल में बंद है सरकार इसी बहाने छोड़ने की तैयारी कर सकती है।

यदि सरकार के पास कोई ऐसी सूचना है कि कुछ लोग संघ के अधिकारियों की हत्या करना चाहते हैं तो उसे पूरी गंभीरता से इसकी जांच करवानी चाहिए। हो सकता है कि कुछ इस्लामी आतंकवादी गुट संघ के नेताओं की हत्या करना चाहते हों और सरकार जानबूझ कर यह प्रचारित कर रही हो कि कुछ अतिवादी हिन्दू संघ नेताओं की हत्या की साजिश कर रहे हैं। ताकि यदि भविष्य में इस्लामी गुट संघ के अधिकारियों पर आक्रमण

करते हैं तो लोगों का शक उनकी और जाने की बजाये इन तथाकथित हिन्दुओं पर ही जाये। ए०टी०एस० को हत्याओं के षडयंत्रों की सूचना की इस एंगल से जांच करनी चाहिए न कि उन शक्तियों के हाथ का खिलौना बन जाना चाहिए। लेकिन ए०टी०एस० ऐसा करने की बजाये उसी षडयंत्र का हिस्सा बनती नजर आ रही है। कांग्रेस को इतने से ही संतोष नहीं है। वह इसी झटके में साधु संतों को भी कटघरे में खड़ा कर देना चाहती है। आर्ट ऑफ लीविंग के श्री श्री रविशंकर जी को लेकर ए०टी०एस० ने मीडिया की सहायता से पूरे दो दिन यही अभियान चलाये रखा ।

ब्रिटिश संसद के हाऊस ऑफ लार्डस में इस बात को लेकर बहस हुई कि आर०एस०एस० आतंकवादी संगठन है या नहीं। बहुत से लोग इस बात पर प्रसन्न हैं कि बहस के बाद ब्रिटिश सरकार ने संघ परिवार से जुड़े संगठनों को आतंकवादी स्वीकार करने से इंकार कर दिया। इस बात पर प्रसन्न होना भूल होगी। षड्यत्रंकारियी का मूल उद्देश्य पहले चरण में केवल विश्वभर में यह बहस चलाना ही है कि संघ परिवार आतंकवादी संगठन है या नहीं। पक्ष—विपक्ष में तर्क दिये जाते रहेगें और कल यदि भारत के लोग सत्ता राष्ट्रवादी शक्तियों को सौंप देते हैं और अमेरिका सहित अन्य गोरे साम्राज्यवादियों को यह अपने हितों के विपरीत लगता है तो वह किसी भी क्षण नई बहस में इसे आतंकवादी संगठन घोषित कर सकते हैं। पहले अमेरिका को इराक के सद्दाम हुसैन की नीतियां अमेरिका के हित में लगती थी, इसलिए अमेरिकी मीडिया और राज्य सत्ता सद्दाम हुसैन और उनकी बाथ पार्टी को उदारवादी और प्रगतिवादी बता रहा था। लेकिन जब अमेरिका को लगा कि अब सद्दाम हुसैन की नीतियां अमेरिका के हित में नहीं है तो उसे हुसैन और उसकी बाथ पार्टी को आतंकवादी घोषित करते हुए एक क्षण भी नहीं लगा। अमेरिका की लम्बी रणनीति के तहत यही भारत और संघ परिवार के साथ भी हो सकता है। अभी शायद यह दूर की कौडी लगती है ।

गोरे साम्राज्यवादियों की भारत को लेकर एक और समस्या है। ब्रिटिश सरकार लगभग दो सौ वर्ष तक भारत पर राज्य करने और उसकी मूल पहचान को परिवर्तित करने की आधार भूत संरचना तैयार करने के बाद पूरे आत्म विश्वास से सत्ता उन्हीं लोगों अथवा समूहों को सौंप कर गई थी जिन पर उन्हें पूरा विश्वास था कि वे भारत में उनकी नीति अथवा दर्शन को निरंतर आगे बढ़ाते रहेंगे। अमेरिका अब उसी ब्रिटिश परंपरा का उत्तराधिकारी है। लेकिन दुर्भाग्य या सौभाग्य से सरकार एवं मोमबती ब्रिगेड के पूरे प्रयासों के बावजूद भारत की मूल पहचान तो नहीं बदली बल्कि इसके विपरीत सांस्कृतिक पुनर्जागरण की लहर दिखाई देने लगी। इसका प्रभाव राजनीति के क्षेत्र में भी दिखाई देने लगा है। संघ परिवार से संबधित संस्थाओं द्वारा अनेक राज्यों की सत्ता संभाल लेना एवं केन्द्र तक पहुंच जाना इसका प्रमाण है।

इसलिए ब्रिटिश-अमेरिकी नीति स्पष्ट है कि जब तक भारत को भी यूनान, मिश्र, रोम की श्रेणी में नहीं ला दिया जाता तब तक दिल्ली में सत्ता उन्हीं लोगों के हाथों में

रहनी चाहिए जिनके हाथों में वे १९४७ में छोड़ गये थे। जब तक पंडित जवाहर लाल नेहरू प्रधानमंत्री रहे तब तक तो अमेरिका व ब्रिटिश सरकार संतुष्ट थी। नेहरू चाहे राजनैतिक क्षेत्र में अमेरिका के विरोधी थे और उन्होंने अमेरिका की सरपरस्ती में नाटो इत्यादि गठबंधन में जाने की बजाये गुटनिरपेक्ष आंदोलन की शुरूआत की थी। इस दृष्टि से वह समाजवादी-वामपथी खेमे के ज्यादा नजदीक माने जाते थे। लेकिन जहां तक उनकी सांस्कृतिक दृष्टि का प्रश्न था वह वही थी जिसकी घुट्टी ब्रिटिश सरकार उन्हें पिला गई थी। गोरी साम्राज्यवादी शक्तियां जानती हैं कि राजनीति चंचला है। वह पलपल रंग बदलती है लेकिन सांस्कृतिक प्रभाव एवं परिवर्तन स्थाई व दीर्घ होता है। अत: नेहरू इस दृष्टि से ब्रिटिश-अमेरिकी गुट के अनुकूल पड़ते थे। लेकिन नेहरू की मृत्यु के बाद लालबहादुर शास्त्री प्रधानमंत्री बने जो निश्चय ही भारतीयता के पोषक थे और सांस्कृतिक दृष्टि से नेहरू के विपरीत ध्रुव थे लेकिन उनकी १८ मास बाद ही रहस्यमय परिस्थितियों में मौत हो गई। क्या इसे भी षड्यंत्र ही माना जायेगा कि आज तक उनकी मृत्यु की जांच नहीं करवाई गई। शास्त्री की मृत्यु के बाद भारत के सत्ता सूत्र एक बार फिर नेहरू परिवार के हाथ में ही चले गये। श्रीमती इंदिरा गान्धी देश की प्रधानमत्री बनी। इंदिरा गान्धी चतुर राजनीतिज्ञ थी। उन्हें किसी भी विचारधारा से नेहरू की तरह कोई मोह नहीं था। लेकिन उन्होंने अपनी राजनैतिक सुविधा के लिए विचारधाराओं को हथियार के तौर पर इस्तेमाल किया। इंदिरा गांधी नेहरू की तरह आदर्शवादी नहीं थी बल्कि वह यथार्थवाद के धरातल पर रहती थी। उन पर न अमेरिका विश्वास कर सकता था और न ही ब्रिटिश सरकार। राजनैतिक दृष्टि से तो बिल्कुल ही नहीं। इंदिरा गान्धी को लेकर ब्रिटिश-अमेरिका की समस्या केवल राजनैतिक ही नहीं थी सांस्कृतिक भी थी। इंदिरा गांधी अपने पिता की तरह समाजवादी भी नहीं थी। इसके विपरीत उसका झुकाव भारतीयता की ओर ज्यादा था जो उमर के साथ साथ बढ़ता जा रहा था। इसका कारण शायद उन पर अपनी मां कमला नेहरू का प्रभाव था, जिसका उत्पीड़न अपने पिता पंडित जवाहरलाल नेहरू के हाथों उन्होंने अपनी आंखों से देखा था। कमला नेहरू भारतीयता की जीवंत प्रतिमा थी। इसलिए इंदिरा गांधी अपने जीवन के अन्तिम दौर में अमेरिका-ब्रिटेन के लिए राजनैतिक व सांस्कृतिक दोनों दृष्टियों से ही असहनीय हो गई थी। इंदिरा गांधी भारत को अमेरिका या रूस का पिछलग्गू बनाने की बजाये उसे शक्तिशाली देश के रूप में देखना चाहती थी। पोखरण में पहली बार परमाणु धमाका कर उन्होंने भविष्य के भारत का संकेत भी अमेरिका को दे दिया था। उसके बाद तो इंदिरा गांधी ने पाकिस्तान को ही खंडित कर दिया। निक्सन ने इंदिरा गांधी के लिए जिन अभ्रद शब्दों को प्रयोग किया है उसे इसी परिप्रेक्ष्य में देखना होगा।

लेकिन प्रश्न था कि नेहरू परिवार की विरासत कौन संभाले जो राजनैतिक एवं सांस्कृतिक दोनों दृष्टियों से अमेरिका–ब्रिटिश समूह के अनुकूल हो। नेहरू परिवार उस मोड़ पर पहुंच गया था जिस पर अमेरिका –ब्रिटिश समूह उसकी भविष्य की उपयोगिता

को लेकर चिंतित दिखाई दे रहे थे। वैसे भी १९६७ के बाद से नेहरू परिवार के नेतृत्व की कांग्रेस को दूसरे राजनैतिक दलों से गंभीर चुनौतियां मिलनी शुरू हो गई थी और आगे भविष्य में कांग्रेस का एक छत्र साम्राज्य समाप्त हो सकता था – ऐसी संभावनाएं दिखाई देने लगी थी। समाजवादी एंव राष्ट्रवादी जनसंघ के संयुक्त प्रयासों के प्रयोग दीनदयाल उपाध्याय व राममनोहर लोहिया ने प्रारंभ कर ही दिये थे। इसलिए ब्रिटिश – अमेरिका की नीति यही थी कि भारत में कांग्रेस का एक छत्र साम्राज्य भी बना रहे और साथ ही कांग्रेस पर ऐसे लोगों का कब्जा भी बना रहे जो उसी सांस्कृतिक नीति का अनुसरण करें जो १९४७ में अंग्रेज उन्हें दे गये थे। इसी काल में नेहरू परिवार में इटली की माईनो सानिया का परिवेश होता है जो बाद में सोनिया गांधी के नाम से प्रसिद्ध हुई। भारत के पूर्व केन्द्रीय विधि मंत्री सुब्रह्मण्यम स्वामी का मानना है कि नेहरू परिवार में सोनिया गांधी का दाखिला एक षड्यंत्र के तहत है ताकि भारत के सबसे पुराने राजनैतिक दल पर कब्जा कर लिया जाये और उसके माध्यम से देश के सत्ता सूत्र संभाल लिये जाये। सोनिया गांधी की नेहरू परिवार में घुसपैठ अमेरिका ने करवाई या रूस ने या यह घुसपैठ स्वाभाविक प्यार का ही परिणाम था, यह रहस्य अभी तक तो भविष्य के गर्भ में ही छिपा हुआ है लेकिन इतना निश्चित है कि सोनिया गांधी के नेहरू परिवार में आ जाने से ब्रिटिश-अमेरिकी समूह निश्चिंत हो गया क्योंकि यदि किसी भी तरह से सोनिया गांधी कांग्रेस पर कब्जा कर लेती हैं और उसके माध्यम से देश की सत्ता के केन्द्र में आ जाती हैं तो ब्रिटिश अमेरिकी समूह को राजनैतिक व सांस्कृतिक दोनों ही दृष्टियों से अनुकूल पड़ता है। सोनिया गांधी की भारत में उपस्थिति वैटिकन के तो और भी ज्यादा अनुकूल है क्योंकि सोनिया की सहायता से चर्च का मतांतरण आंदोलन बल पकड़ सकता है। सोनिया गांधी के नेहरू परिवार में प्रवेश के बाद घटनाएं तेजी से घटित हुई। संजय गांधी की मृत्यु हो गई। संजय गांधी इंदिरा गांधी के उत्तराधिकारी के तौर पर उभर रहे थे। उसके बाद मेनका गांधी का इंदिरा गांधी के घर से निष्कासन हुआ। मेनका गांधी का भविष्य में इंदिरा की भारतीय बहू के रूप में नेहरू परिवार की विरास्त संभाल सकती थी। संजय -मेनका प्रकरण के समाप्त हो जाने के बाद इंदिरा गांधी की हत्या हो गई। कई जांच आयोगों की स्थापना के बाद भी शक की सूई अभी भी घूम रही है। इंदिरा गांधी की हत्या के बाद राजीव गांधी प्रधानमंत्री बने। राजीव गांधी पर हिन्दुत्ववादी होने का शक होने लगा। उनकी सांस्कृतिक दृष्टि संदेह के घेरे में आ रही थी और बकौल सुब्रहमण्यम स्वामी राजीव गांधी को सोनिया गांधी की गतिविधियों पर शक होने लगा था। इसके तुरन्त बाद राजीव गांधी की भी हत्या हो गई। देश का राजनैतिक वातावरण अशांत एंव अस्थिर था। क्या इस स्थिति में सोनिया गांधी देश की सत्ता संभाल सकती थी। शायद नहीं। राजनीति में धैर्य एवं सही वक्त की पहचान बहुत जरूरी होती है। सोनिया गांधी से ज्यादा सही समय व सही स्थान की पहचान भला कौन कर सकता है। विवशता में नरसिंम्हा राव प्रधानमंत्री बनाये गये। नरसिम्हा राव कांग्रेस को सोनिया गांधी के शिकंजे से निकाल कर

सच मुच भारतीय राजनैतिक दल की स्थिति में लाना चाहते थे। भारतीय इतिहास, विरासत और संस्कृति को लेकर उनकी दृष्टि भी राष्ट्रवादी दृष्टि थी। उनकी आस्था एवं विश्वास की जड़े भारतीयता में से ही प्राण तत्व ग्रहण करती थी। स्वाभाविक है कि नरसिम्हा राव के रहने से कांग्रेस के भीतर सोनिया गांधी की स्थिति पतली हो रही थी। यदि ज्यादा देर ऐसा चलता रहता तो सोनिया गांधी को नेहरू परिवार में लाने और कांग्रेस पर कब्जा करने की उपयोगिता पर प्रश्न चिन्ह लग जाता। इसलिए नरसिम्हा राव के खिलाफ कांग्रेस के भीतर से ही एक विश्वासी गुट के माध्यम से जोरदार अभियान चलाया गया। उनकी भारतीय सांस्कृतिक दृष्टि को ही उनका नकारात्मक पक्ष बताया जाने लगा। लेकिन मुख्य प्रश्न यह था कि ऐसे समय में जब सोनिया गांधी के पास न सत्ता में कोई पद है और न ही कांग्रेस पार्टी के भीतर, तब उनकी महत्ता एवं आतंक को कैसे बरकरार रखा जाये ।

इसके लिए अमेरिका सहित अन्य यूरोपीय शक्तियों ने एक नया रास्ता निकाला। जब भी अमेरिका अथवा अन्य यूरोपीय देशों से भारत सरकार के निमंत्रण पर सत्ताधीश, प्रधानमंत्री या अन्य मंत्री दिल्ली आते थे तो वे बकायदा सोनिया गांधी से भी मिलने जाते थे। इसका मीडिया में भी प्रचार प्रसार किया जाता था। यह भारत के भीतर यूरोप की सोनिया गांधी की महत्ता स्थापित करने का यूरापीय प्रयास था।

तभी एक दिन कांग्रेस के भीतर अपने कुछ चुने हुए विश्वस्त साथियों की सहायता से सोनिया गांधी ने कांग्रेस अध्यक्ष सीता राम केसरी को अवैधानिक ढंग से हटा कर कांग्रेस पर कब्जा कर लिया। सीता राम केसरी ने बहुत हो हल्ला मचाया लेकिन सोनिया गांधी ने अपने इर्द गिर्द जिन लोगों का घेरा बना लिया था उन्होंने उनकी एक नहीं चलने दी। उसके बाद कुछ साल तक केन्द्र की राजनीति में अस्थिरता का दौर चलता रहा। सोनिया गांधी द्वारा कांग्रेस पर कब्जा करने के बाद भी वह भारत में अपना प्रभाव नहीं जमा सकी। केन्द्र की सत्ता अन्य राजनैतिक दलों के समूहों में बंटती रही। लेकिन अन्ततः धमाका तो तब हुआ जब भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में बने राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबधंन ने केन्द्र में सरकार बना ली। अब अमेरिकी-ब्रिटिश समूह के लिए सचमुच खतरा पैदा हो गया था। यदि संघ परिवार से उपजी भारतीय जनता पार्टी ज्यादा देर सत्ता में रह जाती तो निश्चय ही भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण को बल मिलता क्योंकि भाजपा ने नेहरू की यूरोपीय सांस्कृतिक नीति को परिवर्तित कर उसे भारतीय स्वरूप देना प्रारम्भ कर दिया था ।

इसलिए भाजपा को परास्त करके किसी भी तरह से सोनिया गांधी के हाथों में भारत के सत्ता सूत्र देना ही ब्रिटिश-अमेरिकी समूह की नीति रही। तभी भारत को नियंत्रित ढंग से चलाया जा सकता था। लेकिन दुर्भाग्य से यूरोपीय शक्तियां जिस सोनिया गांधी पर दाव लगा रही थीं, उसने उनकी सहायता से और उनके सांस्कृतिक दूतों के माध्यम से कांग्रेस पर तो कब्जा कर लिया था, लेकिन वह भारतीय जनमानस को अपनी पकड़ में

नहीं ले सकी थी। सत्ता के चाटुकार, जैसा कि इस देश में इस्लामी और ब्रिटिश काल में भी हुआ है, उसके इर्द गिर्द जुट गये थे। लेकिन भारतीय जनमानस ने सोनिया गांधी को स्वीकार नहीं किया। २००४ के चुनावों में सोनिया गांधी के तमाम प्रयासों के बावजूद कांग्रेस लोकसभा की ५४० सीटों में से केवल १४५ सीटें ही जीत पाई। लेकिन इस बार वे शक्तियां जिनकी मंशा थी कि किसी प्रकार भी भारत की सत्ता राष्ट्रवादी शक्तियों के हाथ में नहीं जानी चाहिए, कोई मौका नहीं खोना चाहती थी। इसी को ध्यान में रखते हुए साम्यवादी शक्तियों की सहायता से यू०पी०ए० का गठन किया गया। कांग्रेस और साम्यवादी दलों में ऐतिहासिक या वैचारिक समानता नहीं है। लेकिन दोनों का भारतीय संस्कृति, इतिहास व विरासत से विरोध जग जाहिर है। साम्यवादी दल भी जानते हैं कि यदि उन्होंने भारत को पश्चिमी दृष्टि के साम्यवादी दर्शन के अनुकूल ढालना है तो यहां के जनमानस में से भारतीय दृष्टि, दर्शन व संस्कृति की जड़े काटनी होंगी। इसी प्रकार सोनिया गांधी भी जानती है कि यदि भारत को पश्चिमी दृष्टि व चर्च के दर्शन के लिए उर्वरा भूमि के तौर पर तैयार करना है तो यहां से भारतीयता को समाप्त करना होगा। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए दोनों दल एकत्रित हो गये और उन्होंने अल्प मत में होते हुए भी सत्ता के केन्द्र से राष्ट्रवादी शक्तियों को अपदस्थ करने में सफलता हासिल की। लेकिन इस सारे प्राणायाम में इतना तो स्पष्ट हो ही गया कि सोनिया गांधी के बल बूते पश्चिम की गोरी शक्तियां भारत की सत्ता पर कब्जा नही कर सकती ।

इस तथ्य को दृष्टिकोण में रखते हुए गोरी साम्राज्यवादी शक्तियों को लगा कि भारत में सोनिया गांधी के साथ मिलकर राष्ट्रवादी शक्तियों पर प्रत्यक्ष प्रहार करना होगा। कुछ ही समय में भारतीय संसद के लिए चुनाव होने वाले हैं। इसलिए उससे पहले ही भारतीय राष्ट्रवादी शक्तियों पर प्रहार करना जरूरी हो गया ।

महाराष्ट्र की कांग्रेस सरकार द्वारा नियंत्रित ए०टी०एस० मालेगांव विस्फोट के बहाने हिन्दू आंतकवाद का काल्पनिक हौआ खड़ा कर भारत की राष्ट्रवादी शक्तियों, संघ परिवार और साधु संतों को बदनाम करने के लिए जो उपन्यास लिख रही है उसका यही उद्देश्य हो सकता है। ए०टी०एस० का व्यवहार, ही उसके उद्देश्य को लेकर संशय पैदा करता है। क्योंकि उसे हिन्दू आंतकवाद पर उपन्यास लिखना है इसलिए उसे कुछ पात्रों की जरूरत है। इसी जरूरत के अनुसार उसने पात्रों को पकड़ लिया है। अब उसे इन पात्रों की तथाकथित गतिविधियों के लिए प्रमाण चाहिए। यह प्रमाण कानून की जरूरत है। यही प्रमाण ए०टी०एस० के पास नहीं है। इससे बचने का भी उसके पास एक रास्ता है। वह रास्ता मकोका का रास्ता है। इस मकोका के रास्ते ए०टी०एस० को इतनी राहत मिल जाती है कि वह जल्द प्रमाण प्रस्तुत करने के झंझट से बच जायेगा। इसलिए उसने अपने पात्रों पर मकोका याद कर दिया है। मकोका लगाने के कारण ए०टी०एस० को जो अतिरिक्त समय मिला है, उसमें वे अपना हिन्दू आतंकवाद का उपन्यास दुनियां भर को सुना सकता है। अपने इस काम में सहायता करने के लिए गोरी शक्तियों का मीडिया तो

है ही। वैटिकन की सरकार का तो भारत लेफ्ट ओवर एजेंडा है ही।

भारत में यह आतंकवाद का एक रूप है। यह आतंकवाद छिपा हुआ आतंकवाद है जिसका प्रभाव धीमी जहर की तरह पड़ता है। यह आतंकवाद ज्यादा घातक है। इस आतंकवाद से भारत की राष्ट्रीयता और उसकी अस्मिता ही बदल सकती है। आतंकवाद का दूसरा स्वरूप इस्लामी है। भारत सरकार की सबसे बडी दिक्कत यह है कि वह आतंकवाद व आतंकवादियों से लड़ना तो चाहती है लेकिन आतंकवाद के इस आंदोलन और इसके उद्देश्य और इसमें संलग्न व्यक्तियों व ताकतों की शिनाख्त करने से बचना चाहती है। हो सकता है कि भारत सरकार ने शिनाख्त करा ली हो, लेकिन राजनीतिक कारणों से वह उनका नाम नहीं लेना चाहती और वह उनसे अप्रत्यक्ष रूप से लड़ना भी नहीं चाहती। आखिर बिना ऐसा किये इस इस्लामी आतंकवाद से कैसे लड़ा जाएगा?

आतंकवाद का यह इस्लामी जेहादी आंदोलन है। भारत इसका शिकार आठवीं शताब्दी से ही हो रहा है। जब इस्लाम की अरबी सेनाओं ने भारत पर आक्रमण किया था। यह आक्रमण उस समय और उसके बाद के वर्षों में सैनिक दृष्टि से सफल रहा और भारत पर इस्लामी ताकतों का कब्जा हो गया। सात–आठ सौ सालों में उसने भारत के जितने हिस्से का इस्लामीकरण कर दिया, १९४७ में उतने हिस्से को भारत से अलग करवा दिया। लेकिन यह आक्रमण रुका नहीं। इसका स्वरुप बदलता गया। २०वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जब इस्लाम का यह आंदोलन पूरी दुनिया में पुन: जागृत हो गया तो भारत पर उसने अपना आक्रमण पुन: आरम्भ कर दिया। यह आक्रमण भारत को इस्लामी देश बनाने के लिए किया गया आक्रमण है और जिहादी इसके लिए अपने प्राण तक न्यौछावर करने के लिए तैयार हैं। यह कुछ सिरफिरे भटके हुए दु:साहसी मुसलमान युवकों का आतंक मचाने के लिए किया गया कारनामा मात्र नहीं है जैसा की भारत सरकार और अंग्रेजी पत्रकारिता के संपादक विश्वास करने के लिए कहते हैं। इस आंदोलन के पीछे एक पूरा वैचारिक दर्शन है, यह इस्लाम का दर्शन है। इस दर्शन के पीछे उसे क्रियान्वित करने के लिए मुसलमान युवकों की सेना है जो अपने उद्देश्य की पूर्णता के लिए प्राण देने तक के लिए नहीं हिचकती। यह उद्देश्य भारत को दारुल हरब की श्रेणी से निकाल कर दारुल इस्लाम की श्रेणी में लाना है। जब तक ऐसा हो नहीं जाता तब तक ८वीं शताब्दी से चला हुआ इस्लामी आक्रमण का यह आंदोलन सफल नहीं कहला सकता। इस्लामी आक्रामक सेना दुनिया के जिस देश में भी गई, उसे कुछ ही वर्षों में इस्लामी देश में परिवर्तित कर दिया। परंतु भारत में उसे आंशिक सफलता ही मिली। भारत के कुछ हिस्से तो इस्लामी हो गये, लेकिन भारत का बड़ा हिस्सा इस्लामीकरण से बचा रहा और अपने मूल भारतीय स्वरूप में ही बना रहा। इस्लामी आतंकवाद का यही दर्द है। पुराने युग में बाकायदा इस्लाम की सेनाएं इस काम को पूरा करने के लिए भारत में आती थी, लेकिन

आधुनिक युग में आक्रमण का स्वरूप व स्वभाव दोनों ही बदल गये हैं। अब इस्लाम की शक्तियां आतंकवाद के माध्यम से भारत पर परोक्ष आक्रमण कर रही है ।

क्या भारत सरकार की इच्छा आक्रमणकारियों को पहचानने और उनके वैचारिक आधार पर आक्रमण करने की है। इन आतंकवादी हमलों के कारण और उद्देश्य इस्लामिक इतिहास में ही देखने होंगे। क्या भारत सरकार की संकल्प शक्ति है? शायद ऐसा नहीं है। अभी भी भारत सरकार इस्लाम के मूल स्वरूप को पहचान नहीं सकी है। सरकार की और कांग्रेस की अपनी राजनीतिक विवशता हो सकती है शायद इसी विवशता के चलते भारत सरकार असली आतंकवादियों को छोड़ कर साधुसंतों में और भारतीय सेना में आतंकवादियों की तलाश कर रही है। यह कांग्रेस की राजनीतिक लाभ की सोच हो सकती है कि उसे वोटों की खातिर येन-केन प्रकारेण कुछ हिन्दू आतंकवादी चाहिए। इतना ही नहीं वह कुछ व्यक्तियों की सत्य असत्य गतिविधियों को प्राचारित करके यथार्थ इस्लामी आतंक के मुकाबले काल्पनिक हिन्दू आतंकवाद का हौआ खड़ा कर रही है। हो सकता है कांग्रेस को कुछ वोटें मिल जाए लेकिन देश मुंबई बनने की ओर अग्रसर हो जाएगा। भारत सरकार मुंबई को तो बचाना चाहती है लेकिन इस्लामी आतंकवाद के राक्षस से लड़ने से कतरा रही है। इतना ही नहीं वह उसे आतंकवादी मानने से ही कुछ सीमा तक इंकार कर रही है। शायद यही कारण था जब प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह अफगानिस्तान गए तो वहां बाबर की कब्र पर भी वह श्रद्धा सुमन अर्पित कर आए। भारत तो बच ही जाएगा। उसने ८०० सालों तक इस्लामी आतंकवाद को झेलते हुए अपनी अस्मिता को बचाए रखा और अपनी निरंतरता में विद्यमान है। भारत अपनी भीतरी ऊर्जा से बचेगा लेकिन भारत सरकार और कांग्रेस पार्टी की कलंक गाथा इतिहास में उसी तरह अमर हो जाएगी जिस तरह जयचंद और मीरजाफर की कलंक गाथा अमर हो गई है। एक बात और भी ध्यान में रखनी चाहिए कि यदि कल इस्लामी आतंकवाद के कारण भारत की भीतरी स्थिति में कुछ परिवर्तन होता है तो वे लोग जो इस्लामी आतंकवाद को कुछ सिरफिरे व्यक्तिवादी युवकों का दुस्साहस बता रहे हैं, उनको नये शासकों के दरबारी बनने में पल भर का समय भी नहीं लगेगा। भारत माता ने मुगलकाल और ब्रिटिशकाल में ऐसे ही नवरत्नों को उस समय के विदेशी राजाओं के दरवारों में शोभित होते हुए देखा है। लड़ाई अंतत: भारत के लोगों को ही लड़नी है और मुंबई के आक्रमण के समय भारतीयों ने उसी संकल्प शक्ति का परिचय दिया है। निश्चय ही भारत विजयी होगा और इस्लामी आतंकवाद पराजित होगा।

निदेशक
क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान
धर्मशाला, हि.प्र.

D.A.V. PUBLIC SCHOOL HAMIRPUR (H.P)

A School with a Difference

- 1St in State (medical Competition) HP-PMT-2007
- 1St in State (Engineering Competition) AIEEE-2007
- 1St in State (Engineering Competition) AIEEE-2006
- 1St in State NTSE-2007 (National Scholarship) 2 Student out of total 5 are from this school.
- Excellent results in CBSE Board classes as well as DAV board classes in 2008.
- Consistent track record of highest number of selections in Medical and Engineering through competitive Exams.
- Highly qualified and dedicated teaching staff.
- Best infrastructure.
- Having state-of-the art three computer labs. including one air conditioned lab.
- Affordable fee structure.
- Branches for Pre-KG classes at different approachable locations in the city.
- Fleet of own six buses.
- Well furnished different labs for Mathematics, Physics, Chemistry, Biology and Computer.
- Use of sophisticated audio-visual teaching aids including LCD projector, LCD TV.
- Facility of Online conferencing for teaching staff.
- Free education for meritorious and economically weak students.
- Educational tours for students.
- Himachal Kesri Award winner 2008-2009

'शुभ कामननाओं सहित'

लघु बचत योजनाएं, ब्याज अधिक आयकार कम

१. किसान विकास पत्र	8 वर्ष 7 महीने में ब्याज दर अवधि में धन दुगना।
2. राष्ट्रीय बचत खाता योजना खाता 1992	7.5 प्रतिशत वार्षिक ब्याज खाता खोलने के चार वर्ष बाद बन्द किया जा सकता है। जमा राशि पर धारा 88 के के अर्न्तगत आयकर छूट तथा अर्जित ब्याज पर धारा 80 एल के अन्तर्गत छूट।
3. राष्ट्रीय बचत पत्र आठवां निर्गम	छमाही मिश्रित ब्याज, इन्कम टैक्स की धारा 88 व 80 एल के अधीन छूट 110,000 रुपए की जमा राशि पर अवधि होने पर 17,452 रुपये मिलते हैं।
4. डाकघर सावधि जमा राशि	छमाही आधार पर ब्याज प्रतिवर्ष दिया जाता है। एक साल का खाता : 6.25 प्रतिशत दो साल का खाता : 6. 50 प्रतिशत तीन साल का खाता : 7.25 प्रतिशत चार साल का खाता : 7.5 0 प्रतिशत
5. 15 वर्षीय लोक भविष्य निधि खाता	8 प्रतिशत मिश्रित ब्याज। जमा राशि पर धारा 88 के अधीन छूट। ब्याज पर आयकर की छूट। सम्पति से पूरी छूट।
6. पंच वर्षीय आवर्ति जमा खाता	9 प्रतिशत वार्षिक चक्रवृद्वि ब्याज तिमाही के हिसाब से 5 साल के बाद इक्ठ्ठी रकम के साथ मिलता है। 10 रुपए के खाते में 728.90 रुपए।
7. डाकघर बचत खाता	व्यक्ति तथा संयुक्त खातों पर 3.5 प्रतिशत वार्षिक ब्याज।

जिलाधीश , शिमला,
जिला शिमला, हि.प्र.

Progress under various head in respect of District Development Agency, Shimla fo the year 2008-09(Upto 1/2009)

S.No.			Name of Scheme	Achievement
1.	**NREGA:**	i	No. of HH issued job cards	69269
		ii	No. of HH provided employment	25152
		iii	Person days generated	615332
2.	**SGSY:**	i	SHGs formed	46
		ii	No. of members of SHGs/Individuals assisted	700
		iii	No. of members of SHGs/individuals trained	2720
		iv	Credit Disbursed	Rs. 211.53 lacs
		v	Subsidy Disbursed	Rs. 57.09 lacs.
3.	**RURAL HOULING :**		No. of Houses under construction	
		i.	Indira Awas Yojna	316
		ii	Atal Awas Yojna	557
4.	**N FBS:**	i.	No. of beneficaries assisted :	166

-Sd/-
Deputy Commissioner-cum-
Chief Executive Officer
DRDA, Shimla-1

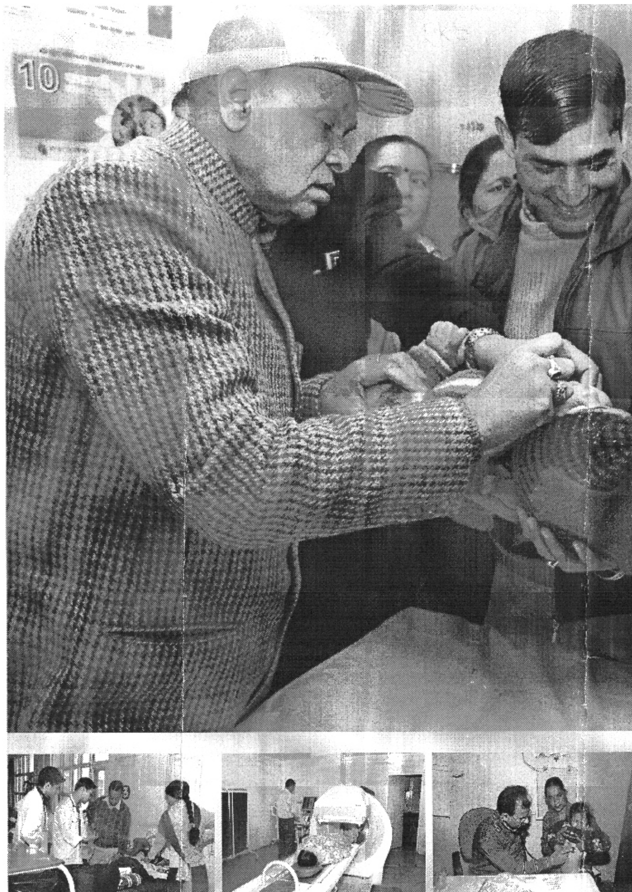

सब से ऊपर हिमाचल

स्वस्थ हिमाचल, सुखी हिमाचल

सभी स्तरों पर रोगी कल्याण समितियां पुनर्गठित एवं प्रभावी

मण्डी में खुलेगा 500 करोड़ की लागत से 350 बिस्तरों वाला सुपर स्पेशियलिटी मेडीकल कॉलेज व अस्पताल

"...क्योंकि हम जानते हैं कि एक स्वस्थ शरीर में ही बसता है एक स्वस्थ दिमाग और एक स्वस्थ दिमाग से ही उदय होता है एक स्वस्थ समाज का।"

–प्रो. प्रेम कुमार धूमल
मुख्य मंत्री, हिमाचल प्रदेश

- 572 रोगी कल्याण समितियाँ प्रभावी रुप में पुनर्गठित, लगभग 175 डॉक्टर एवं 250 स्टाफ नर्सों की नियुक्ति, कबाईली एवं दूरदराज़ के इलाकों तक चिकित्सा सेवाएं पहुंची।
- निजी भागीदारी में 3 मेडिकल कॉलेज, 12 नर्सिंग कॉलेज़ तथा 15 नर्सिंग स्कूल आरम्भ करने के लिए ठोस प्रयास।
- एनीमियामुक्त राज्य बनाने का संकल्प।
- राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना आरम्भ।
- ई-गवर्नेंस से जुड़ेंगे 20 अस्पताल।
- 21 आई. सी. टी. सी. केन्द्रों को बढ़ाकर 44 किया।
- दूर-दराज़ के क्षेत्रों में डॉक्टरों के लिए स्पैशल पैकेज स्वीकृत।

PARTNERS

प्रगति का एक साल, हिमाचल बना मिसाल